शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-२ अंक-१२

माह : जून २०२०

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून

International Day of Yoga 21 June

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२
अंक-१२

माह- जून २०२०

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन

प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

सुश्री ज्योति कुमारी

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ0 अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफजाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह,दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

कोमल मस्तिष्क पटल पर छपी स्मृतियाँ ही व्यक्ति का जीवन निर्धारित करती हैं। इसीलिए प्राथमिक शिक्षा किसी भी बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अतः परिषदीय शिक्षकों के ऊपर एक विशिष्ट उत्तरदायित्व होता है कि वो कैसे एक संतुलित शिक्षा दें जहाँ अक्षर ज्ञान के साथ–साथ नैतिकता की भी बात हो। गणितीय संक्रियाओं के साथ–साथ अनुशासन की भावना का भी विकास हो और आज के दौरे की बात करें तो English Grammer के साथ–साथ स्वच्छता और स्वास्थ्य की भी चर्चा हो।

वर्तमान समय हम सभी के लिए कठिन समय है, विशेषकर बच्चों के लिए। दिन भर खेलने के लिए लालायित बच्चे आज घरों में बन्द हैं। पढ़ाई में रुचि लेने वाले विद्यालय की सूनी राह को निहारते–निहारते थक गए हैं। उनकी सृजनात्मकता कुंठित न हो, उनका एकाकीपन उदासी में न बदले। इसलिए आवश्यक है कि उन्हें सक्रिय रखा जाए। ऐसे में मिशन शिक्षण संवाद की पहल सराहनीय है। आपके द्वारा नियमित रूप से सभी कक्षाओं के लिए प्रश्न संग्रह, वर्कशीट्स आदि उपलब्ध कराए जा रहे हैं। नैतिक शिक्षा की कहानियाँ और गतिविधियाँ भी भेजी जा रही हैं। सकारात्मकता का ये प्रयास प्रशंसनीय है।

ज्ञात हुआ है कि मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रतिमाह एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका के स्तम्भ आकर्षित करते हैं। पत्रिका के आगामी अंक व प्रकाशन के दो वर्ष पूर्ण होने के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

09/07/2020
BEO (T)

(सत्य प्रकाश यादव)
खण्ड शिक्षा अधिकारी
विकास क्षेत्र–टड़ियावां,
जनपद–हरदोई
राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त

सम्पादकीय

इस चराचर जगत में जीने की एक आवश्यक शर्त है – संघर्ष। संघर्ष मनुष्य के जीवनकाल में शैशवावस्था से मृत्युपर्यंत चलता रहता है। वर्तमान काल संक्रमण का काल है। एक सूक्ष्म वायरस ने चारों ओर हाहाकार मचा रखा है। यह वायरस बिना सूक्ष्मदर्शी के तो नहीं देखा जा सकता परन्तु इसके दुष्परिणामों को देखने के लिए किसी चश्मे की आवश्यकता नहीं है। न केवल शारीरिक अपितु आर्थिक, मानसिक, शैक्षिक और न जाने कितने ही मोर्चों पर यह मानव जाति को आघात पहुँचा रहा है।

मिशन शिक्षण संवाद सदैव ही शिक्षकों के मानसिक शांति के लिए भी कार्य करता आया है। विचारशक्ति जैसे मंच इसकी पुष्टि करते हैं। जहाँ शिक्षक अपने विचार वर्चुअल मंचों पर साझा करते हैं। इस संक्रमण काल में जब कक्षाओं के संचालन संभव नहीं है। तब मिशन शिक्षण संवाद लगातार शिक्षकों को ऑनलाइन तकनीकी प्रशिक्षण दे रहा है ताकि शिक्षक इमेज के रूप में अपने नोट्स तैयार कर सकें। साथ ही वीडियो आदि के माध्यम से प्रकरणों के प्रस्तुतीकरण विद्यार्थियों तक पहुँचा सकें। माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल आदि का प्रशिक्षण देकर शिक्षकों को डिजिटली इतना सशक्त बनाया जा रहा है ताकि वे विद्यालय के डेटा के लिए किसी पर निर्भर न रहें।

मिशन शिक्षण संवाद की पत्रिका के जून संस्करण के साथ ही हम मासिक पत्रिका के दो वर्ष पूर्ण कर रहे हैं। जब पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित हो रहा था। तब अनेक प्रकार की शंकाएँ मन में थीं। परन्तु आप सभी के सहयोग और प्रेम से आज हम इस मुकाम तक पहुँच पाए हैं। शैक्षिक लेखों, बाल कविताओं, नवाचार, गतिविधियों आदि से सुसज्जित आगामी अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

आशा है यह अंक भी आप सभी के लिए विगत अंकों की भाँति उपयोगी साबित होगी। जिसका फीडबैक आप टीम तक जरूर पहुँचायेंगे। जिससे भविष्य में और भी अधिक उपयोगी और सकारात्मक सुधार किए जा सकें।।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7–10
मिशन गीत	11
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	12–15
निन्दक नियरे राखिए	16–17
टी.एल.एम.संसार	18–19
नवाचार	20–22
शिक्षण गतिविधि	23
इंग्लिश मीडियम डायरी	24
प्रेरक–प्रसंग	25–26
बाल साहित्य	27
बच्चों का कोना	28–31
माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट	32
महिला अध्यापकों की चुनौतियां	33
योग विशेष	34–35
शिक्षण तकनीकी	36
खेल विशेष	37
बुनियादी गणित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका	38–39
कोरोना विशेष	40–43
अनमोल बाल रत्न	44
बाल काव्यांजलि	45
मिशन हलचल	46

विचारशक्ति–1

शैक्षिक नवाचारों से शिक्षा की जड़ें मजबूत होती हैं

1:– शैक्षिक नवाचार क्या है– वाह क्या खूब शीर्षक है शैक्षिक नवाचार। वर्तमान में अगर शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य हम प्राप्त करना चाहते हैं तो इस बेहतरीन शीर्षक शैक्षिक नवाचार से अच्छा कोई हो ही नहीं सकता है। शैक्षिक नवाचार का अर्थ समझते हैं कि शिक्षा में नए विचारों का आदान – प्रदान हो, नई नीतियाँ शामिल हों एवं कुछ ऐसे कार्य जो शिक्षा को अलग पहचान दिलाए जो कि बदलते परिवेश में आने वाली युवा पीढ़ी को सही राह पर ले जाए। दूसरे तरीके से देखा जाए तो शैक्षिक नवाचार हमें शिक्षा में नया कार्य करना मात्र नहीं होता है, बल्कि यह शिक्षा में किसी भी कार्य को हम नए तरीके से किस प्रकार कर सकते हैं, उसमें क्या बदलाव ला सकते हैं जिससे शिक्षा को सरल और भविष्य के लिए बेहतरीन बनाया जा सकता है।

2:– शैक्षिक नवाचार का क्षेत्र –वर्तमान में हम शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र को दो तरीके से समझ सकते हैं जिसमें पहला – ऑफलाइन क्षेत्र तथा दूसरा – ऑनलाइन क्षेत्र है क्योंकि वर्तमान में दोनों क्षेत्र शैक्षिक कार्य के नवाचारों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि कही दोनों क्षेत्रों की उपलब्धता हो जाती है तो कहीं दोनों में से एक क्षेत्र अपना कार्य बखूबी से कर सकता है।

शैक्षिक नवाचारों का ऑफलाइन क्षेत्र वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो शिक्षा में भौतिक संसाधनों की बहुत कमी देखी जा सकती है। इन संसाधनों की कमी से हम ऑफलाइन कार्य से शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग करके वास्तविक शिक्षा को हासिल करने का प्रयास कर सकते हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि शैक्षिक नवाचारों के लिए हम घर से शुरुआत करें तो इससे बेहतरीन और कोई विकल्प नहीं होगा क्योंकि बालक के सीखने की प्रारंभिक पाठशाला परिवार ही होता है तथा बालक द्वारा प्रारंभिक पाठशाला में सीखा गया ज्ञान उसे नई दिशा प्रदान करता है, उसका भविष्य मजबूत करता है। अपने घरों में बालक को सिखाने के लिए हमें खुद को एक बालक बनाना पड़ेगा और उसके साथ भिन्न–भिन्न प्रकार की क्रियाकलापों जिसमे खिलौने, खेल, संवाद के माध्यम से प्रतिदिन नया सिखा सकते हैं जिससे उसकी नींव मजबूत हो जाए क्योंकि बालक की अगली सीढ़ी विद्यालय होता है। जहाँ उसका परिवार अलग हो जाता है। प्राथमिक पाठशाला में सीखा गया ज्ञान विद्यालय में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। विद्यालय में शैक्षिक नवाचारों के लिए मानवीय संसाधन जैसे शिक्षक और विद्यार्थी, अन्य संसाधन– ब्लैक बोर्ड, पुस्तकालय, चित्रकला कक्ष, संगीत कक्ष, विज्ञान कक्ष, विभिन्न खेलों से सम्बंधित सामग्री, अलमारियाँ, क्राफ्ट और विज्ञान संबंधी सामग्री, पेड़–पौधे, समय–समय पर होने वाली पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ व शैक्षिक भ्रमण भी एक आकर्षक नवाचार के दायरे में आता है। जो एक अच्छा वातावरण बनाए रखता है। बच्चा, शिक्षक के पाठ पढ़ाने की अपेक्षाकृत अपने अनुभव से अधिक सीखता है। बच्चा तभी सीखेगा और उसमें रचनात्मकता तभी आएगी, जब कक्षा में शिक्षक पाठ्य सहगामी कार्य या संबंधित गतिविधियाँ अधिक करवाएँगे। विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप या गतिविधियाँ होने से बच्चों की मानसिक, शारीरिक व सामाजिक रुप से सक्रियता बढ़ती है, उनमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता के गुण पैदा

होते हैं। विद्यालय में एक ऐसा वातावरण होना चाहिए कि बच्चों को कक्षा में प्रवेश करते ही सक्रियता का एहसास हो तभी बच्चे सक्रिय और सृजनशील होंगे। एक अच्छा शिक्षक वही होता है जो बाल मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञाता भी हो।

शैक्षिक नवाचारों का ऑनलाइन क्षेत्र–वर्तमान का युग डिजिटल का युग है और इस युग में प्रतिदिन नए – नए आविष्कारों का प्रयोग देखने को मिल रहा है। हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि हम डिजिटल की दुनिया में जी रहे हैं। आओ हम सभी मिलकर डिजिटल की दुनिया में शैक्षिक नवाचारों को अनोखे रूप में ले जाते हैं। जहाँ शिक्षा को सरल और भविष्य के लिए बेहतरीन कैसे बनाएँ। उस पर कुछ ऑनलाइन डिजिटल के माध्यम से समझाने का प्रयास करते हैं। डिजिटल की दुनिया में सोशल नेटवर्किंग जैसे यू ट्यूब, फेसबूक, ट्विटर, इंस्टाग्राम पर हम शिक्षा के वास्तविक एवं बुनियादी ढाँचे का निर्माण कर सकते हैं। जैसे वर्तमान में कोरोना वैश्विक महामारी ने पूरी दुनिया को अपने चपेट में ले लिया है जिससे शिक्षा प्रणाली बहुत प्रभावित हुई है। शैक्षिक संस्थान सब बंद हैं और होना भी जरूरी है क्योकि यह भयंकर बीमारी है। तो वर्तमान स्थिति में ऑनलाइन के माध्यम से शैक्षिक नवाचारों का प्रयोग कर शिक्षा को घर बैठे पुनः सुचारू रूप से चलाया जाए तो बेहतरीन होगा। इसके लिए हमे अभिभावकों और बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली से जोडना होगा। चाहे लाइव कक्षा हो या ग्रुप के माध्यम से संवाद हो। ऑनलाइन शैक्षिक नवाचार वर्तमान स्थिति में बहुत ही कारगर साबित हो सकता है और इसका परिणाम भी बेहतरीन होगा।

3:– शैक्षिक नवाचार की वर्तमान की शिक्षा व्यवस्था में आवश्यकता–वर्तमान शिक्षा पद्धति में नवाचारों का प्रयोग करना बहुत जरूरी है क्योंकि वर्तमान की शिक्षा प्रणाली से बच्चे खोखले होते जा रहे हैं। उनमें वास्तविक शिक्षा का अभाव है। केवल रट्टू तोते के समान रटते जा रहे हैं जो एक चिंतनीय विषय है। इसके लिए हमें शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग करना जरूरी है। नवाचारों के प्रयोग से शिक्षा की नींव को मजबूत और भविष्य को सुनहरे पंख लगा सकते हैं। नवाचारों के माध्यम से बच्चों में मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूती मिलेंगी और बच्चा भविष्य में परिपक्व हो जाएगा।

4:– शैक्षिक नवाचार का महत्व–शैक्षिक नवाचारों का शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है। नवाचारों के माध्यम से शिक्षा को भविष्य में वास्तविक बनाया जा सकता है। शिक्षा की नींव को बेहतरीन और मजबूत किया जा सकता है क्योंकि शिक्षा ही मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करती है। हमारे लिए गर्व की बात है हम शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग कर भारत को विश्व गुरु बना सकते हैं क्योंकि शिक्षा ही वह हथियार है जो किसी राष्ट्र को विश्व गुरु बनाने में योगदान दे सकती है।

कुमार जितेन्द्र "जीत"
वरिष्ठ अध्यापक गणित,
साईं निवास मोकलसर,
तहसील – सिवाना,
जिला – बाड़मेर,
राजस्थान।

विचारशक्ति–2

बच्चों के बस्ते में किताबें क्यों हैं?

एक अध्यापक के रूप में जब मैं बड़े–बड़े बस्ते लादे, कमर झुकाये और चेहरे पर तनाव लिए स्कूल जाते बच्चों को देखता हूँ तो मन करता है कि दौड़कर जाऊँ और उसमें से सारी किताबें निकालकर फेंक दूँ पर मेरे लिए ऐसा कर पाना नामुमकिन है क्योंकि बस्ते का बोझ वर्तमान शिक्षा में एक जरुरी आवश्यकता के रूप में स्वीकार्य हो चुका है। एन सी ई आर टी ई की गाइड लाइन को दरकिनार कर स्कूलों ने बचपन को इस बोझ के नीचे दबाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। हालाँकि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 (एन सी एफ) के प्राविधानों में बस्ते के बोझ को कम करने की कवायद के बाद एक उम्मीद जागी थी कि अब बच्चों को बस्ते के अनावश्यक बोझ से मुक्ति मिलेगी पर स्कूलों के गैर संवेदनशील रवैये के चलते 15 साल में यह बोझ घटने की बजाय बढ़ता ही नजर आया।

कभी कभार मैं जब अपने खुद के बच्चों के बस्ते को देखता हूँ तो पाता हूँ कि कुल वजन में आधी से अधिक किताबें ऐसी हैं जिन्हें स्कूल ले जाने का कोई औचित्य ही समझ मे नहीं आता है। जब मैं उन्हें किताबें घर छोड़कर जाने को बोलता हूँ तो उनके चेहरे पर एक अनजाना भय और तनाव दिखाई देता है जो अध्यापकों के द्वारा दिये निर्देशों की अवेहलना और दंड की संभावना की वजह को बताने के लिए पर्याप्त है इसलिए मजबूर होकर मुझे उनकी किताबों को बस्ते में ही दुबारा रखने को मजबूर होना पड़ता है। स्कूल के अध्यापक द्वारा विज्ञान, गणित, भूगोल, सामाजिक विषय आदि को कक्षा में पढ़ाने के बीच उस विषय की किताब कहाँ पर आती है यह मेरी समझ में कभी नहीं आया क्योंकि मुझे सदैव लगता है कि आदर्श शिक्षण में छात्र अध्यापक के बीच अगर किसी की जरूरत है तो वह है कक्षा में लगा ब्लैकबोर्ड। एक अच्छा अध्यापक शिक्षण के दौरान पूरे कालांश में सीधे आँख से आँख मिलाकर बच्चों से विषय के बारे में सम्प्रेषण करता है जिसमें कहीं भी पुस्तक खोलने देखने और पढ़ने का कोई औचित्य नही है तो फिर विषयों की पुस्तक बच्चों के बस्ते में क्यों है?

हालाँकि आरंभिक कक्षाओं में कक्षा 3–4 तक हिंदी की किताब की जरूरत इसलिए समझ में आती है क्योंकि अभी बच्चे अपनी वाचन शक्ति को बढ़ा रहे होते हैं इसलिए कक्षा में उन्हें किताब को पढ़ने के प्रेरित करना आवश्यक होता है। आरंभिक कक्षाओं में कहानी की चित्र वाली किताबों और वर्क बुक की भी जरूरत समझ मे आती है पर क्या इन्हें स्कूल में ही प्रयोग कर वहीं जमा कराकर बच्चों को बस्ते के बोझ से मुक्ति नहीं दी जा सकती है? बड़ी कक्षाओं में किताबों का उपयोग बस्ते के बोझ को बढाने के सिवा और कुछ नही है। इतिहास के अध्यापक का दायित्व है कि वह किताब में लिखे समस्त पाठ्यक्रम को कक्षा में रोचक तरीके से बताये और छात्र को पाठ घर से दुहराकर लाने को प्रेरित करे। अगर इस बीच अध्यापक और छात्र के बीच किताब आती है तो यह छात्र और अध्यापक के बीच बनी तारतम्यता और एकाग्रता को भंग करने का काम करती है। विज्ञान और गणित में तो अध्यापक और छात्र के बीच किताब का होना निहायत गैरजरूरी है।

वास्तव में छात्र के बस्ते में किताब का होना अध्यापक के शिक्षण कौशल पर भी गंभीर प्रश्न खड़ा करता है। पुरानी पद्धति को अपनाने वाले ज्यादातर शिक्षक कक्षा कक्ष में विषय को सीधे न पढ़ाकर छात्रों को किताब से पढ़ने को बाध्य करते हैं और कालांश के अंत मे 5 से 10 मिनट में उसका सार बताकर उसे समाप्त कर देते हैं। पठन पाठन की इस विधि को एन सी एफ 2005 में गैर जरूरी मानते हुए बाल केंद्रित शिक्षण पर जोर दिया गया था। अधिकांश विद्यालयों के छात्र इन

पुस्तकों के साथ गाइड और अन्य सहायक पुस्तकें भी रखे मिल जाते हैं क्योंकि ऐसा उनके अध्यापक कहते हैं या विषय वस्तु न समझ पाने के कारण इनका उपयोग उनकी मजबूरी बन जाती है।

ताज्जुब यह भी है कि इतने भारी बस्ते को ले जाने वाले और महँगे कान्वेंट में पढ़ने बाले छात्र को अंत मे निजी कोचिंग या टयूशन के द्वारा ही विषय को समझने को बाध्य होना पड़ता है। इसका साफ अर्थ है कि उनके बस्ते की किताबों ने उनके ज्ञान को बढ़ाने में कोई विशेष मदद नहीं की है। ताज्जुब यह भी है कि कक्षा 11 और 12 तथा उच्च शिक्षा में छात्रों को एक प्रकरण के लिए एक से अधिक पुस्तकों के अध्ययन की जरूरत होती है पर इंटर कॉलेज और महाविद्यालयों के छात्र एक पतली कॉपी, रजिस्टर या नोट पैड के साथ विद्यालय में जाते मिल जायेंगे क्यूंकि इस उम्र तक पहुँचते–पहुँचते उन्हें पता चल जाता है कि विद्यालय में पुस्तकें ले जाना एक गैरजरूरी कवायद है।

बच्चों के बस्ते के बोझ के लिए स्कूल से ज्यादा अभिभावक भी जिम्मेदार हैं। अभिभावक स्वयं ही बच्चे के बस्ते में सभी पुस्तक रखकर स्कूल भेजने को बाध्य करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे उनके बच्चे के अध्ययन में कोई बाधा नहीं आएगी। स्कूलों में टाइम टेबल होने के बाद भी छात्र के बस्ते में सभी विषय की किताबें बनी रहना विद्यालय और अभिभावक दोनों की छात्र के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति उनकी उदासीनता दर्शाता है। सभी किताबें बस्ते में बनी रहने से अध्यापक, छात्र और अभिभावक के मन में एक सुकून सा देता है। शायद ही आज तक 2 प्रतिशत अभिभावक भी कभी बस्ते के बोझ को लेकर स्कूल चर्चा करने गए हों। ताज्जुब तब होता है कि एन सी ई आर टी के नियमों को पूर्ण रूप से अपनाने वाले केन्द्रीय विद्यालयों के छात्रों के बस्ते भी कान्वेंट से कम भारी नजर नहीं आते।

वास्तव में इन किताबों की बस्ते में उपस्थिति अध्यापकों को कक्षा शिक्षण में लापरवाही करने के लिए अवसर उपलब्ध कराती है इसलिए स्कूल कभी भी इस पर गंभीर नजर नहीं आये। अब सरकार और जागरूक अभिभावकों को अपनी तरफ से पहल करनी ही होगी ताकि बचपन को बस्ते के अनावश्यक बोझ से बचाते हुए स्कूल में गुणवत्तापरक रोचक शिक्षा के लिए एक रास्ता बनाया जा सके।

अवनीन्द्र सिंह जादौन
संयोजक मिशन शिक्षण संवाद
उत्तर प्रदेश

मिशन गीत

मिशन शिक्षण संवाद की बगिया

मिशन शिक्षण संवाद की बगिया,
है शिक्षकों के भाव की बगिया।
शिक्षक रोज नए टी.एल.एम. बनाते,
बच्चे उनका लाभ उठाते,
जल्दी अपना पाठ सीख जाते।
काव्यांजलि की तो बात है न्यारी,
कविता से मिलती रोचक जानकारी।
शिक्षक करते नये ज्ञान का प्रबन्धन,
ICT प्रशिक्षण हो या हो विचार दर्शन।
स्वरांजलि में है कविताओं की माला,
चल रही है ऑनलाइन आईसीटी की कार्यशाला।
आओ अनमोल रतन से सबका परिचय करवाएँ,
पर्सन ऑफ द वीक से सबको मिलवाएँ।
कर महिला सशक्तीकरण की पोस्ट चिंतन,
हम सभी को मिलता मोटिवेशन।
मिशन शिक्षण संवाद आगे है रहता,
बेसिक का नाम करना है रोशन।
नई प्रतिभा की खोज हो रही,
रेडटेप मूवमेंट चलाकर,
हम सबने किया खूब पौधारोपण।
शिक्षक कर्म है सिखाते रहना,
मुश्किल होता है संजो के रखना,
मिशन ने सिखाया आगे बढ़ना,
आगे ही तुम चलते रहना,
मिशन शिक्षण संवाद आगे है रहता,
बेसिक का काम नाम करना है रोशन।
मिशन शिक्षण संवाद की बगिया,
है शिक्षक के भाव की बगिया।

डॉ0 प्रीति चौधरी,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय
सिकंदराबाद,
विकास खण्ड–सिकंदराबाद,
जनपद–बुलंदशहर।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

मित्रों आज हम आपका परिचय मिशन शिक्षण संवाद के माध्यम से बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न शिक्षकों से करा रहे हैं, जिन्होंने आपसी सहयोग, समन्वय, सकारात्मकता और व्यवहार कुशलता से टीम वर्क के रूप में विद्यालय परिवार के साथ मिल कर विद्यालय को विविध शिक्षण गतिविधियों और उपलब्धियों का केन्द्र बना दिया है जिससे विद्यालय न सिर्फ बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना बल्कि सामाजिक विश्वास का केन्द्र बना दिया है जो हम सभी के लिए प्रेरक एवं अनुकरणीय प्रयास हैं।

आइये देखते हैं आप सभी के द्वारा किए गये कुछ प्रेरक और अनुकरणीय प्रयासों को।

पूरी पोस्ट देखने व पढ़ने के लिए दिये गये लिंक्स पर क्लिक करें—

बृजेश सिंह इ०प्र०अ० पूर्व माध्यमिक विद्यालय धारूपुर ठाकुरान, विकास क्षेत्र– क्यारा जनपद– बरेली

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_513.html

४३४ बृजेश कुमार पूर्व माध्यमिक विद्यालय पिलखुन, विकास क्षेत्र– जलेसर जनपद– एटा

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_171.html

४३५ चारु कुलश्रेष्ठ (स०अ०) प्रा०वि० रामपुर घनश्याम ब्लॉक– शीतलपुर, जनपद– एटा (यू.पी.)

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_839.html

४३६ दीपिका जैन प्रा०वि० बनगवां, ब्लॉक– सालारपुर, जनपद– बदायूँ, राज्य– उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/04/blog-post_526.html

४३७ पुष्पा पटेल (प्र.अ.) प्राथमिक विद्यालय संग्रामपुर ब्लॉक– चित्रकूट, जनपद– चित्रकूट राज्य– उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_76.html

४३८ अनुराग अवस्थी (प्रधानाध्यापक) प्राथमिक विद्यालय कचूरा ब्लॉक – पिसावां, जनपद– सीतापुर, राज्य– उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_44.html

४३६ रश्मि तारा (प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय कसेंदा (अंग्रेजी माध्यम)चायल, कौशाम्बी

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_69.html

४४० सुप्रिया सिंह, प्रा०वि० बनियामऊ– 1ज, ब्लॉक– मछरेहटा, जनपद– सीतापुर, राज्य– उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/1st.html

४४१ प्रशान्त कुमार, नगला चोखे, ब्लॉक – जैथरा, जनपद –एटा, राज्य – उ०प्र०

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_0.html

४४२ उषा गौड़ (स०अ०) रा०पू०मा०वि० – डोईवाला ब्लॉक – डोईवाला जनपद – देहरादून, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_680.html

४४३ बलवन्त कुमार चौधरी प्राथमिक विद्यालय देवियापुर, ब्लॉक –बर्डपुर, जनपद– सिद्धार्थनगर, उत्तरप्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_664.html

४४४ विनोद कुमार पाण्डेय (प्र०प्र०अ०) इंग्लिश मीडियम प्रा० विद्यालय चतुर्भुजपुर प्रथम, ब्लॉक – बरसठी, जनपद – जौनपुर, उ०प्र०

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_592.html

४४५ रघुनाथ द्विवेदी प्राथमिक विद्यालय चायल, ब्लॉक– चायल, जनपद– कौशाम्बी, राज्य– उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_351.html

४४६ नरेन्द्र कुमार (स०अ०) उच्च प्राथमिक विद्यालय लखनापुर, वि०ख०– भाग्यनगर, जनपद– औरैया

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_742.html

४४७ श्री पाल सिंह (प्र०अ०) प्रा०वि० रामपुर घनश्याम, ब्लाक– शीतलपुर, जनपद– एटा (उ.प्र.)

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_524.html

४४८ वन्दना गुप्ता (स०अ०) पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर ब्लॉक– चिनहट, जनपद– लखनऊ

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_70.html

४४९ अमिता शुक्ला प्राथमिक विद्यालय मठिया, वि०क्षे०–पुवायाँ, जनपद– शाहजहाँपुर, उ०प्र०

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_818.html

निन्दक नियरे राखिए

लॉक डाउन की अवधि में सरकारी विद्यालयों में शिक्षण में नवाचार

सर्वप्रथम तो हम यह जान लें कि नवाचार है क्या? नवाचार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है नवआचार। नव का अर्थ है नया और आचार का अर्थ है व्यवहार या आचरण अर्थात् नवीन व्यवहार या व्यवहार में परिवर्तन। परिवर्तन व नवाचार एक दूसरे के पूरक या पर्याय हैं। नवाचार कोई नया कार्य करना मात्र नहीं है वरन् किसी भी कार्य को नए तरीके से करना भी नवाचार है। व्यवहार में परिवर्तन वह होता है जो पूर्व में विद्यमान विधियों और परिस्थितियों में नवीनता का संचार करता है।

इसके अनुसार जब कोविड–19 के संक्रमण काल में लॉकडाउन के कारण विद्यालय बंद हो गए तो सरकार द्वारा ऑनलाइन शिक्षण के आदेश दिए गए। सर्वप्रथम तो यही स्वयं में एक नवाचार है। बच्चों की शिक्षा बाधित ना हो बच्चे घर में बंद रहकर अवसादग्रस्त ना हो, इसके लिए सरकार द्वारा अनेक नवाचार किए गए। जैसे– समय–समय पर बच्चों के लिए विभिन्न वर्ग पहेली, तंबोला एवं शैक्षिक गतिविधियों से संबंधित पोस्टर उपलब्ध कराना। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आकाशवाणी एवं दूरदर्शन पर प्रसारित किए गए। जैसे–मीना की दुनिया, आओ अंग्रेजी सीखें एवं विभिन्न विषयों से संबंधित शैक्षिक कार्यक्रम।

यह तो रही सरकार द्वारा किए गए नवाचारों की बात। जब बात नवाचारों की आती है तो हमारे शिक्षक भाई–बहन कहाँ पीछे रहने वाले हैं। जब शिक्षकों ने व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर ऑनलाइन कक्षा शिक्षण प्रारंभ किया तो उसकी ओर बच्चों को आकर्षित करने के लिए बेसिक शिक्षा परिवार के हमारे शिक्षकों ने जो प्रयास जो नवाचार किए तो उन्होंने प्राइवेट विद्यालयों के शिक्षकों को भी पीछे छोड़ दिया। ऐसे समय में हमारे शिक्षक भाई– बहनों की छिपी हुई प्रतिभा भी सामने आई। पाठ्यक्रम की पुस्तकें उपलब्ध न होने के कारण अधिकांश शिक्षकों ने एक से एक सुंदर वर्कशीट तैयार कर बच्चों को उपलब्ध कराई। किसी ने पाठों की विषयगत एनीमेटेड वीडियो बनाई तो किसी ने एक से बढ़कर एक टी०एल०एम० बनाये। कुछ शिक्षकों ने तो पूरे–पूरे पाठ ही कविताबद्ध कर दिए। इतना ही नहीं,हमारे कुछ शिक्षक साथियों ने तो ऑनलाइन परीक्षा कराकर ई– सर्टिफिकेट भी वितरित कर दिए और ऑनलाइन नामांकन भी कर लिए। ऐसे सभी शिक्षक साथियों को हृदय से साधुवाद।

लेकिन क्या इन नवाचारों का, इन प्रयासों का अपेक्षित परिणाम हमें प्राप्त हो रहा है? क्या हमारे परिषदीय विद्यालयों में इस प्रकार के नवाचार पूर्ण रूप से लाभप्रद हैं? आखिर ऑनलाइन कक्षा शिक्षण में कितने प्रतिशत छात्र हमसे जुड़ पा रहे हैं और कितने प्रतिशत छात्र हमारे नवाचारों का लाभ उठा पा रहे हैं क्योंकि हमारे पास जिस परिवेश से बच्चे आते हैं उनका और उनके अभिभावकों का ध्यान वर्तमान समय में जीवन–यापन हेतु आवश्यक सुविधाएँ जुटाने की ओर है। उन लोगों के पास एंड्रॉयड फोन नहीं हैं और यदि किसी के पास है तो उनको रिचार्ज करने हेतु वे आर्थिक रूप से संपन्न नहीं हैं। सरकार द्वारा या शिक्षकों द्वारा जो पोस्टर, वर्कशीट इत्यादि बच्चों को ऑनलाइन उपलब्ध कराई जा रही हैं उसका लाभ कितने प्रतिशत बच्चे उठा पा रहे हैं क्योंकि बिना हार्ड कॉपी के उनका लाभ उठा पाना बहुत ही मुश्किल है।

अंत में यही कहना चाहूँगी कि हमें अपने मनोबल को कम नहीं करना है। अपनी ऊर्जा का ह्रास नहीं करना है अपितु इसी प्रकार ऊर्जावान रहकर कार्य करते रहना है क्योंकि स्थिति सामान्य होने पर, विद्यालय खुलने पर इन नवाचारों का हमें बहुत लाभ मिलने वाला है। हमें हिम्मत नहीं हारनी है। कार्य करते रहना है क्योंकि कार्य करेंगे तो या तो सफलता ही मिलेगी या अनुभव ही प्राप्त होंगे। इसलिए साथियों मेहनत करते रहिए। क्योंकि कहा भी गया है–

''जहाँ मेहनत का पसीना गिरता है।
वहाँ पत्थर भी नगीना बनता है।।''

ऋतु सिंघल,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अंबेहटा चांद–1,
विकास खण्ड– रामपुर मनिहारान,
जनपद– सहारनपुर।

विभिन्न प्रकार के वाद्ययन्त्र

सामग्री– थर्माकोल गिलास, नारियल का बाहरी कवर, रंग, रस्सी या डोरी, फेवीकोल, कागज, कैंची आदि।

ढोलक– सर्वप्रथम थर्माकोल गिलास लेंगे व रंग से चारों तरफ रंग देंगे और सूखने के लिए रख देंगे। गिलास के चौड़े मुँह की तरफ से एक–दूसरे को फेवीकोल की सहायता से चिपका देंगे। फिर उसमें V शेप में चारों तरफ से डोरी लगा देंगे और आपका ढोलक तैयार हो जाएगा।

डमरू– थर्माकोल गिलास को भूरे रंग से रंग दीजिए और फेवीकोल की सहायता से गिलास के नीचे वाले हिस्से को एक–दूसरे से चिपका दीजिए। चौड़े मुँह की तरफ कागज का गोल वृत्त काटकर चिपका दीजिये और V शेप में डोरी लगा दीजिए। इस तरह आपका डमरू तैयार है।

तबला– नारियल का बाहरी कवर लेंगे उसको बराबर से गोल कर देंगे और उसके ऊपर कागज के गोल वृत्त में एक गत्ता चिपका देंगे। बीच में भूरे रंग का एक छोटा गोला बना देंगे। इस तरह तबला बनकर तैयार हो जाएगा।

उषा मिश्रा,
सहायक अध्यापक,
राजकीय प्रा0 वि0हरचन्द,
विकास खण्ड–थराली,
जनपद–चमोली।

प्यारा परिवार

कक्षा:– 4
विषय :– हमारा परिवेश

प्रयुक्त सामग्री:– शादी के पुराने कार्ड, पुराना कार्टन बॉक्स, थर्माकोल, आइसक्रीम स्टिक, रंग आदि।

उपयोगिता:– बच्चे परिवार की उपयोगिता एवं परिवार के प्रकार के विषय में जानेंगे।

निर्माणकर्ता :– हेमलता गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मुकंदपुर,
विकास खण्ड:– लोधा,
जनपद:– अलीगढ़।

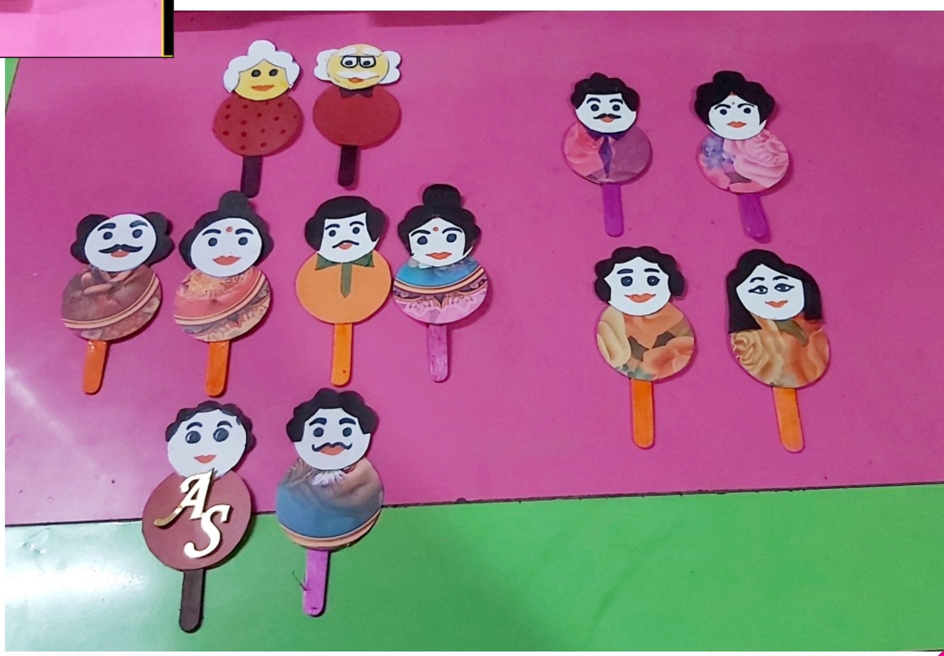

संस्कृत वंदना को योगासनों के माध्यम से याद कराना

विद्यालय में संप्रयोग

यह गतिविधि सभी विद्यालयों के लिए लाभदायक है। इस गतिविधि के माध्यम से छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। इसके माध्यम से किसी भी कठिन विषय को आसानी से याद कराया जा सकता है।

योजना– इस गतिविधि के माध्यम से सभी छात्रों की सक्रिय भागीदारी संभव है। योगासनों के माध्यम से विभिन्न विषयों का कविता पाठ बच्चे रुचिकर तरीके से सीखते हैं।

क्रियान्वयन– सबसे पहले मैंने पाठ्यक्रम की सूची तैयार की। विषयों में संस्कृत भाषा को चुना। जिसमें बच्चे सबसे कम रुचि लेते थे। फिर मैंने बच्चों को इसकी जानकारी कराते हुए समझाया कि हम संस्कृत वंदना को योगासनों के साथ याद करेंगे। मैं बच्चों को 5 सालों से योगा करा रही हूँ। इसलिए सभी बच्चे अच्छी तरह से योगासन कर लेते हैं। बच्चे खुश हुए और फिर मैंने बच्चों को वंदना के हर शब्द पर योगासन करना सिखाया। लगातार पाँच दिन की मेहनत के बाद बच्चों ने संस्कृत वंदना को याद कर लिया। बच्चे इस गतिविधि से बहुत खुश हुए तथा अन्य विषयों को भी योगासनों के साथ करना प्रारंभ किया। अब विद्यालय के सभी बच्चे इस गतिविधि के माध्यम से संस्कृत वंदना हिंदी व अंग्रेजी कविता याद करते हैं। मेरा यह नवाचार सभी बच्चों तथा अन्य शिक्षकों को भी बहुत पसंद आया।

समस्या का समाधान

मैंने विद्यालय में देखा कि बच्चे संस्कृत वंदना याद नहीं कर पाते थे तथा संस्कृत जैसे कठिन विषयों को याद करने में जी चुराते थे। इसी समस्या के समाधान के लिए मैंने यह नवाचार विद्यालय में क्रियान्वित किया तथा इस समस्या का समाधान काफी हद तक सफल रहा।

रीनू,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय अबूपुर नंबर टू,
विकास खण्ड–मुरादनगर,
जनपद–गाजियाबाद।

तंबोल

नवाचार लागू करने से पूर्व कक्षा कक्ष में आने वाली चुनौतियाँ

बच्चों को अक्सर गिनती पहचानने में दिक्कत होती है, वो गिनती रटे रहते हैं, पर बीच में से अगर गिनती लिखा दें तो बच्चे नहीं पहचान पाते हैं, इसी समस्या के समाधान हेतु मैंने इस नवाचार को लागू किया और काफी सफलता पायी।

नवाचार के क्रियान्वयन में उपयोग की गयी सामग्री एवं लागत

इस नवाचार को लागू करने में कोई भी सामग्री व कोई लागत नहीं लगती है। यह पूरी तरह शून्य निवेश पर आधारित है।

नवाचार क्रियान्वयन की प्रक्रिया

1– इस नवाचार के अन्तर्गत प्रत्येक बच्चा अपनी कॉपी में 9 कॉलम बना लेता है(कॉलम की संख्या आवश्यकतानुसार घटायी या बढ़ायी भी जा सकती है)

2– हर बच्चा 1 –100 के बीच की कोई भी गिनती हर कॉलम में लिखा लेता है।

उदाहरण

2	11	21
82	30	55
61	72	91

3– एक बच्चा गिनती कार्ड से बीच–बीच की गिनती बोलता है।

4– प्रत्येक बच्चा हर गिनती ध्यानपूर्वक सुनता है और अगर वो गिनती उसके किसी भी कॉलम में है तो उसे काट देता है।

उदाहरण – बच्चे ने बोला 15 तो जिस बच्चे के कॉलम में 15 लिखा है, वह उसे काट देगा।

2	15	21
82	30	55
61	72	91

5– इस तरह जिस बच्चे के कॉलम के सारे नंबर कट जाएँगे, वह विजयी होगा और कक्षा के अन्य बच्चे उसके लिए ताली बजाएँगे।

नवाचार के दौरान आने वाली समस्याएँ

इस खेल के दौरान कुछ बच्चे चालाकी करते हैं जैसे– किसी कॉलम में 9 लिखा है और बच्चे ने 90 बोला तो बच्चा आगे 0 बढ़ाकर उसे काटकर 90 कर देता है और जीत जाता है।

2	9	21	2	90	21
82	30	55	82	30	55
61	72	91	61	72	91

समस्याओं के समाधान हेतु उपाय

इस समस्या के समाधान हेतु हम खेल शुरू होने से पहले प्रत्येक बच्चे के नाम के आगे उसके द्बारा लिखे गए सारे नंबर एक कॉपी में लिखा लेते हैं और अंत में अंकों का मिलान कर लेते हैं।

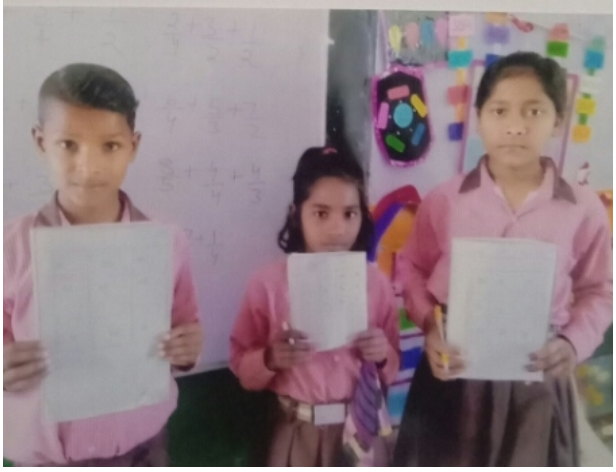

नवाचार का प्रभाव

इस नवाचार को लगाए करने के बाद काफी आश्चर्यजनक परिणाम मिले।

1– बच्चों के अधिगम स्तर में बहुत ही सकारात्मक प्रभाव दिखायी पड़ा।

2– छात्रों में गणित के प्रति बहुत रुचि जागृत हुई व शैक्षिक वातावरण के निर्माण में सहायता मिली।

3– छात्रों की गिनती की पहचान में काफी सुधार हुआ और जो 20–30 प्रतिशत था वो बढ़कर 60–70 प्रतिशत तक पहुँच गया।

4– शैक्षिक उद्देश्यों की सम्प्राप्ति में सहायता मिली।

5– विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में गुणात्मक सुधार हुआ।

6– गणित बोझिल ना लगकर रुचिकर लगने लगी।

7– गणित में कमजोर छात्र अच्छा प्रदर्शन कराने लगे।

विद्यालय के सभी बच्चे इस नवाचार से लाभान्वित हुए हैं। इस नवाचार को मेरे व अन्य शिक्षकों के द्वारा विद्यालय में हर कक्षा में नियमित लिखवाया जाता है। लगातार अभ्यास से बच्चों द्वारा गिनती पहचानने व लिखने में काफी सुधार हुआ है।

निवेदिता उपाध्याय,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय कर्म डांडा,
शिक्षा क्षेत्र–मिल्कीपुर,
जनपद–अयोध्या।

दिमागी कसरत

यह रोचक गतिविधि है। इस गतिविधि के द्वारा बच्चे बार–बार अभ्यास करके फल, सब्जी, फूल और जानवरों के अधिक से अधिक नाम जान सकते हैं और याद करने की क्षमता का विकास होता है। इस गतिविधि को कक्षा के सभी बच्चे एक साथ कक्षा के अंदर और बाहर कर सकते हैं। बच्चों को कुछ हटकर गतिविधि करवाने से उनके अंदर नयी ऊर्जा का संचार होता हैऔर बच्चे जल्दी सीख जाते हैं।

क्रियाविधि–

इसमे पहला बच्चा बोलेगा आम।
फिर दूसरा बच्चा पहले बच्चे के फल को भी बोलेगा और उसमें अपना एक फल जोड़ देगा केला।इस प्रकार वह बोलेगा आम और केला।
फिर तीसरा बच्चा पहले,दूसरे बच्चे के फल को जोड़ते हुए अपना फल बोलेगा तो हो जाएगा आम, केला, संतरा।
इसी प्रकार चौथा बच्चा पहले दूसरे तीसरे के फल को जोड़ता हुआ उसमे अपना फल भी बोलेगा तो हो जाएगा आम, केला, संतरा, लीची।
इसी प्रकार पाँचवाँ, छठा,सातवाँ जितने भी कक्षा में बच्चे हैं, वे सभी खेलते हैं और अपने से पहले वाले बच्चों के फलों को जोड़ते चले जाते हैं।
ध्यान रखना है कि फलों का क्रम सही रहे।
अतः इस विधि द्वारा बच्चों में याद करने की होड़ हो जाती है और स्मरण शक्ति का विकास भी होता है। कम समय मे अधिक सीख जाते हैं।

श्रीमती पार्वती पंवार,
प्रधानाध्यापक,
रा0 आ0 प्रा0 वि0 मदन नेगी,
विकास खण्ड–जाखणीधार,
जिला –टिहरी गढ़वाल,

Necessity of Converting our mode of Education into English

English better called "Global language" is second most used language not only in India but many countries all over the world as a mode of communication.It has its usage in education, science, business , entertainment, technology and even in sports. Moving towards importance of English as an international and foreign language and why it is important to learn English and educate our coming generation in English medium. Language is a primary source of communication it is a method through which we share our ideas and thoughts with others. Out of all spoken languages English is most commonly spoken all over the world. Our motto to educate our children is that they stand on their own with their heads high not only in our country but wherever they go in the world. Among 400 Billion native speakers English is understood or spoken by one to 1.6 billion people so to sustain worldwide English medium is must.

English is easy to learn. It has simple vocabulary so no student will face any difficulty to understand it. It is the language of internet most of the content produced on the internet is in English so by knowing and understanding English we can explore the world through internet.

Keeping the above mentioned features of English and also the increasing demand of modern day parents to teach their kids in English medium, In 2015 the basic education department had converted a few primary schools of Uttar Pradesh into English medium institutions and further in 2017 basic education minister opened over 5000 English medium primary schools assessing their popularity among students but not just converting schools into English medium would work, we will have to take a step forward into training teachers in English and providing schools with modern facilities like computers, projectors, disciplined activity areas and sports facilities which will not only train students in English but also in technology and help them go along with this modern world.

Archana Arora,
Head Teacher,
Primary School Barethar khurd,
Block-Khajuha,
District-Fatehpur.

प्रेरक प्रसंग

राम प्रसाद बिस्मिल

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है"

कौन नही जानता है इन पंक्तियों के बारे में? भारत में बच्चे से लेकर हर किसी की जुबान पर हैं और इन्हें सुनकर जिस व्यक्ति का नाम उभरकर आता है, वो हैं राम प्रसाद बिस्मिल। राम प्रसाद बिस्मिल खुद एक अच्छे कवि थे, लेकिन ऊपर लिखी पंक्तियाँ उन्होंने नहीं, बल्कि शाह मोहम्मद हसन बिस्मिल अजीमाबादी ने लिखी थीं। बिस्मिल ने फाँसी पर चढ़ने के पहले इस गीत को गाया और इसलिए ये इनके नाम से मशहूर हो गया।

आइए बताते हैं एक बड़ी प्रेरक घटना बिस्मिल जी के बारे में।

इनको सच पर डटे रहने की आदत थी। लगभग 18 साल की उम्र में बिस्मिल पहली बार ट्रेन में बैठे। इन्होंने टिकट तीसरे दर्जे की खरीदी, लेकिन इंटर क्लास में बैठकर दोस्तों से बात करते हुए चले गए। इंटर क्लास का टिकट तीसरे दर्जे के टिकट से ज्यादा महँगा था। बाद में इन्हें अपने इस कृत्य पर बहुत दुख हुआ। दोस्तों से इन्होंने कहा कि ये भी एक तरह की चोरी है, हमें बाकी के पैसे स्टेशन मास्टर को दे देना चाहिए। एक और घटना है, इनके पिताजी दीवानी में किसी पर दावा करके वकील से कह गए थे कि जो काम हो वह बिस्मिल से करा लें। कुछ जरूरत पड़ने पर वकील साहब ने इन्हें बुलाया और कहा कि वकालतनामे पर पिताजी के हस्ताक्षर कर दो। पर बिस्मिल ने ऐसा करने से मना कर दिया क्योंकि इन्हें वो पाप लगा। वकील साहब ने बहुत समझाया कि सौ रुपए से अधिक का दावा है, मुकदमा खारिज हो जाएगा। लेकिन इन पर कोई असर नहीं पड़ा और आखिरकार इन्होंने दस्तखत नहीं किए ऐसे थे हमारे राम प्रसाद बिस्मिल जी। नमन है कोटि–कोटि इनको।

डॉ0 अनुराग पाण्डेय,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय औरोताहरपुर,
विकास खण्ड–ककवन, जनपद–कानपुर नगर।

कभी विश्वासघात मत करना

बात उस समय की है जब रामप्रसाद बिस्मिल जी जेल में बंद थे। उनकी सुरक्षा के लिए एक सिपाही को तैनात किया गया था ताकि वे भाग न सकें। रात का समय था सिपाही की आँख लग चुकी थी। तभी बिस्मिल जी ने भागने का विचार बनाया। उन्होंने उस सिपाही को जगाया और कहा कि– तुम आने वाली मुसीबत से अवगत हो? ऐसा सुनकर उस सिपाही को कुछ समझ में आया। उसने बिस्मिल जी से कहा कि– कृपा करके आप यहाँ से मत भागिए, अगर आप यहाँ से भाग गए तो आपके भागने के जुर्म में मैं गिरफ्तार हो जाऊँगा और मेरे बीवी बच्चे भूंखो मर जाएँगे। कृपा करके आप यहाँ से मत भागिए।

उस सिपाही की बात सुनकर बिस्मिल जी को दया आ गई। वह चाहते तो उस समय भाग सकते थे, लेकिन उन्होंने भागने का प्रयत्न नही किया। जब बिस्मिल जी शौचालय गए तो सिपाही ने उनकी रस्सी खोल दी और ऐसे ही जाने दिया। तो वहाँ पर मौजूद दूसरे सिपाही ने कहा कि ये भाग जाएँगे। तो उस सिपाही ने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि वे नही भागेंगे।

वास्तव में बिस्मिल जी चाहते तो भाग सकते थे लेकिन उन्होंने उस मौके का उपयोग नहीं किया और वहाँ से नहीं भागे क्योंकि वे किसी का विश्वास नही तोड़ना चाहते थे। वास्तव में ऐसे महान इंसान इस दुनिया में बहुत कम ही जन्म लेते हैं जो अपने उसूलों पर चलते हैं तथा किसी का विश्वास नही तोड़ते हैं।

हम सभी को कभी भी किसी का विश्वास नही तोड़ना चाहिए।

– पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल

अशोक कुमार,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय रामपुर कल्याणगढ़,
विकास खण्ड–मानिकपुर,
जनपद–चित्रकूट।

बर्फ के आदमी

शिक्षण संवाद

जितना आवश्यक बच्चों का यथार्थ की धरती की सैर करना है। उतना ही आवश्यक कल्पनाओं के आकाश में गोते लगाना है क्योंकि कल्पनाएँ ही मनुष्य को प्रेरित करती हैं कुछ नया करने को। कालांतर में की गयीं कई कल्पनाएँ आज वास्तविकता का रूप ले चुकी हैं। चाहे वो किसी घटना का सजीव प्रसारण हो, वायुयान में उड़ना या पल भर में सन्देशों का प्रेषण।

आज भी बात करेंगे ऐसी पुस्तक की जो एक साइंस फिक्शन है। बाल साहित्य में साइंस फिक्शन का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यह दुर्भाग्य है कि हिन्दी में साइंस फिक्शन बहुत कम लिखा गया है। लेकिन सूर्यनाथ सिंह की बर्फ के आदमी इस कमी को पूरा करती है। यह कहानी है एक बच्चे की जो अपने माता–पिता के साथ एक अभ्यारण्य में घूमने जाता है और खेल–खेल में एक धातुई कछुए पर बैठता है। यह कछुआ वास्तव में एक स्पेसशिप है। जो उसे एक बर्फीले ग्रह पर ले जाता है। उस ग्रह पर बर्फ की मानिंद एकदम सफेद प्राणी रहते हैं। जिनकी तकनीकी

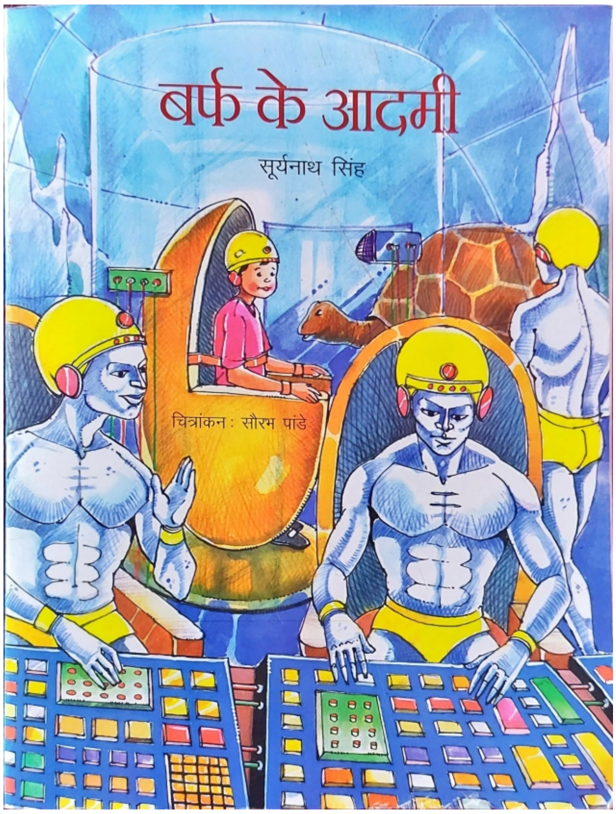

क्षमता पृथ्वीवासियों से बहुत आगे है। लेकिन फिर भी वे बर्फीले आदमी किसी कारणवश पृथ्वीवासियों से परेशान हैं। मानवों के कारण उनके ग्रह का अस्तित्व संकट में पड़ गया है। क्या है यह संकट और क्या यह संकट दूर हो पाएगा? यह जानने के लिए आपको बर्फ के आदमी पढ़ना ही होगा। तो अबकी अपने पुस्तकालय में आप इस साइंस फिक्शन को सम्मिलित कर रहे हैं न?

बच्चों का कोना

गुब्बारे वाला आया

गुब्बारे वाला आया
संग गुब्बारे लाया
लाल, पीले, हरे, नीले
बहुत से रंग लाया
गुब्बारे वाला आया
हाथ में पकड़े सतरंगी
गुब्बारे, बच्चों को जो लगते प्यार,
माँग रहे हैं बच्चे गुब्बारे,
दो चाचा हमको यह सारे,
दाम बताकर चाचा बोले
दस में दूँगा दो गुब्बारे,
ले आओ पैसे तुम घर से दुलारे,
मौज करो तुम दिन भर सारे,
कभी उड़े आसमान की तरफ,
कभी हाथ में आ लेते लपक,
रंगों की दमक से पा लेते चमक,
गुब्बारे वाला आया
मनमौजी रंग वह लाया
रंग बिरंगे रंग उड़ेले,
बच्चों के दिल को छू ले,
गुब्बारे वाला आया
संग गुब्बारे लाया।

तेजेंद्र कौर,
सहायक अध्यापिका,
अंग्रेजी माध्यम प्रा0 वि0 बिहारीगढ़,
विकास क्षेत्र–मुजफ्फराबाद,
जनपद–सहारनपुर।

(1)

दस चिरैयां

एक चिरैया दो चिरैयां,
तीन चिरैयां चार चिरैयां।
दूर गगन में उड़ जाती हैं,
अपने पंख पसार चिरैयां।।
पाँच चिरैयां छह चिरैयां,
सात चिरैयां आठ चिरैयां।
अपने प्यारे बच्चों को,
दाने रही हैं बाँट चिरैयां।।
नौ चिरैयां दस चिरैयां,
पेड़ पे रहतीं दस चिरैयां।
अपने अपने घोंसलों में,
बैठ के चहकें खुश चिरैयां।।

(2)

आओ गौरैया आँगन में

चीं चीं करती गौरैया,
तुम आओ मेरे आँगन में।
फुदको चहको झूम के नाचो,
गाओ मेरे आँगन में।।
छज्जे पर रख दिए हैं मैंने,
पत्ते, टहनी और तिनके।
नीड़ बना लेना तुम यहीं,
सुन्दर सा इनको बुनके।।
चावल, गेहूँ, दाल के दाने,
सुबह शाम दूँगा पानी।
यहीं रहो अपनी बनके,
होगी ना कोई परेशानी।।
मुझको अपना दोस्त बना लो,
संग तुम्हारे खेलूँगा।
सब ही रक्खें ध्यान तुम्हारा,
ऐसा सबसे बोलूँगा।।

दीप्ति सक्सेना,
सहायक अध्यापक,
पूर्व मा0 वि0कटसारी,
आलमपुर जाफराबाद,
जनपद–बरेली।

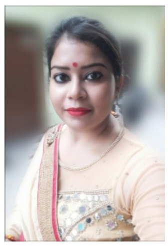

बच्चों का कोना

I am red, I am red,
At night, go to bed.
I am green, I am green,
Go to bath and be clean.
I am yellow, I am yellow,
Good things u should know.
I am blue, I am blue,
Solve puzzle with clue.
I am white, I am white,
Don't wear clothes too tight.
I am black, I am black,
At your birthday, eat cake.
I am purple, I am purple,
Don't be rabbit ,be turtle.
I am pink, I am pink,
Many things u should think.

Namrata srivastave,
Head Master,
Prathmik vidhyalay Badeha Syodha,
Block-Mahua,
District-Banda.

नम्रता और अहं

एक खेत था। खेत की मेड़ पर दो वृक्ष थे। एक आम का और दूसरा यूकेलिप्टस का। आम का वृक्ष बहुत ही नम्र, शीतल छाया वाला और मित्रतापूर्ण स्वभाव का था। जिसके कारण उसकी टहनियों पर अनेकों पक्षियों ने अपने घोसलें बनाये थे और सुबह–शाम पक्षियों का कलरव गूँजता रहता था। आम का पेड़ अपने मालिक का बहुत आदर करता था। वह अपने मालिक को गर्मियों में हर साल मीठे आम, छाया और ठंडी प्राकृतिक हवा देता था।

एक बार आम के पेड़ ने यूकेलिप्टस के पेड़ से कहा की इस खेत में हम दोनों ही पेड़ हैं। क्यों न हम आपस में एक दूसरे के मित्र बन जाएँ? क्या आप मेरे मित्र बनोगे? यह सुनकर यूकेलिप्टस का पेड़ जोर–जोर से हँसने लगा। उसने कहा कि मेरे समक्ष तुम कहीं नहीं टिकते। मैं कितना लंबा हूँ। मैं अपने सारे काम खुद करता हूँ। अपने लिए भोजन तथा पानी का भी खुद ही प्रबंध करता हूँ। तुम्हारे मालिक यदि तुम्हें जल न दें तो तुम तो सूख जाओगे। तुम तो एक तरह से अपने मालिक के अंधभक्त और विवश हो जो दिन भर इन तुच्छ चिड़ियों की चिकचिक सुनते हो। कितने निर्बल और कायर हो। मैं तो इन चिड़ियों को कभी घोंसला न बनाने दूँ। मुझे देखो मुझे किसी की आवश्यकता नहीं है। मैं तो सर्व शक्तिमान हूँ। मेरी तुम्हारी कोई तुलना नहीं है। तुम तो अपने मालिक की दया पर निर्भर हो। इस प्रकार यूकेलिप्टस ने आम के वृक्ष का बहुत उपहास किया। आम का वृक्ष यह सब सुनता और देखता रहा। किन्तु वह उदास नहीं हुआ क्योंकि उसे अपनी टहनियों पर बैठी चिड़ियों का संगीत अच्छा लगता था। उसे अपने मालिक से प्रेम था जिन्होंने उसे बचपन से बड़े प्रेम से सींच पालकर इतना बड़ा किया था। आज वह एक पेड़ बन चुका था। कभी–कभी उसकी छाया के नीचे बैठकर वह अपने परिवार की सारी परेशानियाँ भी कहता रहता था और गर्मियों में आने वाले फलों से उन कर्जों को चुकाने की बात भी करता था जो अक्सर परिवार का खर्च पूरा न हो पाने पर उसे लेने पड़ते थे। आम का पेड़ ये सब देखता और सुनता रहता था। उसे अपने मालिक की सहायता करके बहुत खुशी मिलती थी।

बसंत आ गयी और मौसम खुशनुमा हो गया। नये–नये कोपलों से दोनों पेड़ खिल उठे। आम में बौर आ गये थे। पेड़ के मालिक ने आम की सिंचाई की और अब कुछ समय आम के पेड़ के नीचे ही बिताने लगा। यूकेलिप्टस का पेड़ भी बहुत हरा–भरा हो गया था। लंबा होने के कारण वह हवा से बातें करते न थकता था। धीरे–धीरे गर्मियाँ आ गयीं। आम पकने लगे। किसान को पैसों की बहुत जरुरत थी। उसने आम बेचे और धन कमाया। एक दिन एक आदमी आया और यूकेलिप्टस के पेड़ को देखा। पेड़ के मालिक से उस पेड़ का सौदा किया।

अगले दिन सवेरे यूकेलिप्टस का पेड़ काट दिया गया। आम के पेड़ को यूकेलिप्टस की यह दशा देखकर बहुत दुःख हुआ। अतः मनुष्य को आम के पेड़ की भाँति ही नम्र, आस्थावान, दयालु और मिलनसार बनना चाहिए। यूकेलिप्टस की तरह घमंडी और दूसरों के दोष देखने वाला नहीं बनना चाहिए।

हमें सदैव ईश्वर पर आस्था और विश्वास रखना चाहिए। उन्हें इस अनमोल जीवन को देने के लिए धन्यवाद देते रहना चाहिए।

जो लोग सकारात्मक सोच रखते हैं उनका जीवन सफल और शांत रहता है। अतः हमेशा अच्छा और सकारात्मक सोचना चाहिए। जो दूसरों का भला सोचते हैं प्रकृति स्वयं उनका भला करती है।

रश्मि यादव,
प्रधान शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय देवगनमऊ,
विकास खण्ड–सफीपुर,
जनपद–उन्नाव।

माह की सर्वश्रेष्ठ ब्लॉग पोस्ट

मिशन शिक्षण संवाद एक कोशिश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/05/blog-post_28.html

मिशन शिक्षण संवाद ऐसा नवाचारी,
नवज्ञान का नव स्रोत सृजनकारी।

यहाँ न कोई छोटे न बड़े,
शिक्षक, बच्चे सब लक्ष्य पर अड़े।

खेल–खेल में कैसे हो शिक्षा?
यह इस बात की देता है दीक्षा।

भंडार ज्ञान का साझा होता,
लाभ सभी को जी भर मिलता।

पहुँचे सब तक ज्ञान की बारिश,
रहती हरदम इसकी कोशिश।

नवाचार का सागर अपार,
आमंत्रित रहते सबके विचार।

न रहे शिक्षा से कोई वंचित,
ऑनलाइन भी करें हम शिक्षित।

अद्‌भुत मिशन की पहल को,
इच्छित सब अपनाने को।

नव मंजिल नव राह दिखाये,
ज्ञान दीप हर मन में जगाये।

आओ हम सब हाथ मिलाएँ,
मिशन शिक्षण संवाद को बढ़ाएँ।

रचयिता
संगीता कोठियाल फरासी,
सहायक अध्यापिका,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय गहड़,
विकास खण्ड–खिर्सू,
जनपद–पौड़ी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड।

महिला शिक्षकों की विशेषताएँ

हमारे समाज में शिक्षक का बहुत आदरणीय स्थान है। चाहे वह पुरुष शिक्षक हो या महिला शिक्षक। हमारा देश निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। विकास की इस राह में महिलाओं का योगदान लगातार बढ़ रहा है। किसी भी क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों से पीछे नहीं है। इसी विकास की राह में हमारे शिक्षा क्षेत्र का बहुत योगदान है।

हमारे बच्चे जो भविष्य के निर्माता हैं उनके शिक्षा अर्जन के साथ–साथ बहुमुखी विकास में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका है। महिला शिक्षकों की संख्या पहले की अपेक्षा अधिक हुई है। इसके बहुत से कारण हैं पहला तो पारिवारिक कारण है कि घर की जिम्मेदारियों को बाँटना। अन्य कारणों में महिला शिक्षक का अपने कार्य के प्रति जुड़ाव। महिला शिक्षकों में धैर्य, दया, करुणा, सहनशीलता आदि विशेषताओं के कारण बच्चे उनसे जल्दी जुड़ जाते हैं।

महिला शिक्षक, शिक्षक होने के साथ–साथ महिला भी है अर्थात कोमल हृदय की स्वामिनी। हमारे बच्चे जो एक कोमल पौधे की तरह होते हैं। बहुत ही जिज्ञासु, कल्पनाशील और संवेदनशील होते हैं। उनकी जिज्ञासा को धैर्यता से शांत करना अति आवश्यक है। एक महिला शिक्षक उनकी कल्पना और संवेदना को बेहतर तरीके से समझ पाती हैं। इस कोमल पौधे को अच्छी तरह से सींचना बहुत ही आवश्यक है ताकि वह बड़ा होकर छायादार पेड़ बने।

प्राइमरी और प्री प्राइमरी स्तर पर महिला शिक्षक की मातृत्व की भावना के कारण बच्चे भावनात्मक रूप से महिला शिक्षक से जल्दी जुड़ जाते हैं। महिला शिक्षक में बच्चों के प्रति प्यार और लगाव ज्यादा होता है। महिला शिक्षक की आवाज में नम्रता और मृदुलता के कारण बच्चे लगाव महसूस कराते हैं। हमारे देश में ग्रामीण क्षेत्र अधिक होने के कारण परिवार भी ऐसे स्कूल में अपनी बच्चियों को भेजना पसंद करते हैं जहाँ पर महिला शिक्षक हों।

बड़ी कक्षाओं में विज्ञान आदि विषय छात्राएँ महिला शिक्षक से अच्छी तरह से समझ पाती हैं। छात्राएँ अपनी समस्याएँ बिना झिझक के महिला शिक्षक से कह पाती हैं। महिला शिक्षक छात्राओं की समस्याओं का निदान बड़ी ही संवेदनशीलता से कर पाती हैं। छोटे बच्चों की मानसिकता इस प्रकार की होती है उन्हें महिला शिक्षक से पढ़ना अच्छा लगता है।

महिलाओं के लिए गर्व की बात है कि आज शिक्षा क्षेत्र में उनका योगदान बढ़ रहा है। महिलाएँ नित नए–नए प्रयोग व नवाचार के द्वारा आसमान को छूने की ओर निरंतर बढ़ रही है।

सुषमा मलिक,
अध्यापिका,
कंपोजिट स्कूल सिखेड़ा (अंग्रेजी माध्यम),
विकास क्षेत्र–सिंभावली,
जनपद–हापुड़।

विचारशक्ति के लिए ध्यान

हमारी सकारात्मक सोच और कार्यों का असर हमें सफलता की ओर ले जाता है। ऐसे विचार मन में उपजे निराशा के अन्धकार को दूर करके आशाओं के द्वार खोलता है। विचार हमारे मन में उठने वाली भावनाओं और स्मृतियों की तरंग हैं। विचार कर्म की नींव व ऊर्जा से भरा हुआ होता है। विचार से मानव, समाज, राष्ट्र जुड़ता या टूटता है। मनुष्य के विकास के लिए अच्छे विचरों का ही मन में निवास व विकास बचपन से ही जरुरी है। अन्यथा ये स्वयं का या दूसरों का अहित कर सकता है। इसी के लिए ध्यान एक अति महत्वपूर्ण यौगिक क्रिया है। ध्यान योगसूत्र में वर्णित आष्टांग योग का एक अंग है। ध्यान मतलब एक ही विचार पर मन को एकाग्र करना। मानसिक शान्ति, एकाग्रता, दृढ़ मनोबल आदि उद्देश्यों के लिए ध्यान किया जाता है। ध्यान हमारे मस्तिष्क की तरंगों के स्वरुप को अल्फा स्तर पर ले जाता है जिस से रचनात्मकता, प्रसन्नता में वृद्धि, कुशाग्र बुद्धि, स्पष्टता आदि विकसित होती है। सकारात्मक सोचना या न सोचना हमारे मन के नियन्त्रण में है और हमारा मन हमारे नियन्त्रण में हो इसलिए ध्यान बहुत आवश्यक है। संसार में कोई भी ऐसी समस्या नहीं रहेगी जो आपके मन की शक्ति से अधिक शक्तिशाली हो। इस युग की सबसे बड़ी शक्ति शस्त्र नहीं सदविचार है।

सन 2020 में आये कोविड–19 वाइरस के प्रकोप से विश्व भर में हजारों मृत्यु हर दिन हो रही हैं जिनमे कुछ प्रतिशत डर, गुस्से, चिन्ता आदि के कारण उत्पन्न मानसिक बीमारियों जैसे अवसाद, व्याकुलता से आत्महत्या से हो रही हैं। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि अगर हम मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं तो शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं रह सकते तथा प्रतिरोधक क्षमता में भी कमी आती है, तो कोविड–19 जैसी लाइलाज बीमारी से कैसे खुद को बचा पाएँगे। ऐसी अवस्था में आपके विचारों का शक्तिशाली होना अति आवश्यक है। आपके विचार आपको रोगी भी बना सकते हैं और निरोगी भी। अच्छे व उच्च विचारों के लिए, इसकी शक्ति का जीवन में सही प्रवाह होने के लिए ध्यान को जीवनशैली का हिस्सा बनाना जरुरी है। ध्यान के अनेक फायदे हैं और अनेक विधियाँ भी।

बच्चों में ध्यान के लाभ

: आत्मविश्वास में वृद्धि

:बेहतर स्वास्थ्य

:मानसिक ऊर्जा में वृद्धि

:अधिक गतिशीलता

:एकाग्रता

:उच्च विचार

विधि

प्रारम्भ में सिद्धासन में बैठकर आँख बन्द कर लें, दायें हाथ को दायें घुटने तथा बायें हाथ को बायें घुटने पर रखें, गहरी श्वांस लें और छोड़ें। कुछ देर अपनी श्वांस पर ही ध्यान लगायें अर्थात विचार करें श्वांस भीतर और बाहर कहाँ तक गई है। मौन का अनुभव करें। 30 दिनों तक 5 से 10 मिनट के लिए अभ्यास करें, फिर समय बढ़ाते जाएँ। इससे हम खुद को एकदम मजबूत विचारों वाला बना सकते हैं अर्थात जो कह दिया वो करके दिखाने वाला व्यक्ति बन सकते है। ध्यान से हम शरीर के सभी ऊर्जा केंद्र को जाग्रत करते हैं। जिससे इनमें प्राण का नियमित बहाव बना रहता है। ध्यान के लाभ महसूस करने के लिए नियमित अभ्यास करें। अपनी अनंत गहराइयों में जाकर खुद को जानें और जीवन को उच्च विचार द्वारा समृद्ध बनाएँ।

शालिनी पाण्डेय,

सहायक अध्यापक,

पूर्व माध्यमिक विद्यालय भोलापुर,

विकास खण्ड–चमरौआ,

जनपद–रामपुर।

शिक्षण तकनीकी

दीक्षा- शिक्षकों व विद्यार्थियों के लिए एक राष्ट्रीय मंच।

दीक्षा एक शैक्षणिक वेबपोर्टल है। इसे नॉलेज शेयरिंग के डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के रूप में सरकार द्वारा विकसित किया गया है। जिसके माध्यम से शिक्षक व विद्यार्थी को बहुत मदद मिल सकती है। इस शैक्षणिक वेब पोर्टल की जानकारी प्रत्येक शिक्षक, विद्यार्थी के साथ ही अभिभावकों को भी होनी चाहिए।

ऐप के बारे में—

(1) ऐप का नाम— दीक्षा ऐप। दीक्षा ऐप का पूरा नाम— डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग है।

(2) कैसे डाउनलोड करना है— सबसे पहले मोबाइल के प्ले स्टोर में इस ऐप को diksha app को सर्च करें और इंस्टॉल करें। google play store में diksha लिखने पर NCTE द्वारा निर्मित इस पोर्टल को डाउनलोड करके इसका त्वरित उपयोग किया जा सकता है। यह ऐप मानव संसाधन विकास मंत्रालय के द्वारा बनाया गया है।

(3) https://play.google.com/ store/apps/details.Id=in.gov.diksha.app

(4) प्रयोग के तरीके—

(1)जब इस ऐप यूज करेंगे तब कुछ सूचनाओं की जैसे—शिक्षक, विद्यार्थी, कक्षा, भाषा, बोर्ड आदि की पूर्ति करें।

(2) ऐप के उपयोग हेतु आपसे कुछ अनुमति माँगी जाएगी जिसे आप प्रदान करके ऐप का प्रभावी उपयोग कर सकेंगे।

(3) ऐप पर अलग—अलग बोर्ड हेतु अलग अलग विषय व अलग—अलग कक्षा हेतु विषय सामग्री उपलब्ध है। अतः आप अपने वर्ग का ही चयन करें।

(4) ऐप के अधिकतम उपयोग हेतु आप पाठ्यपुस्तक में दर्शित QR कोड का इस्तेमाल करें।

(5) ऐप से लाभ—

(1)दीक्षा ऐप ओर पाठ्य सामग्री 15 भाषाओं में उपलब्ध है।

(3)इनमें असमिया, बंगाली, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओडिशा, सिन्धी, तमिल, तेलगू, उर्दू, छत्तीसगढ़ी जैसी भाषा शामिल हैं।

(3)दीक्षा ऐप ओर 1 से लेकर 12 वीं ग्रेड तक के लिए सामग्री उपलब्ध हैं।

(4)6 राज्यों व एनसीईआरटी में ग्रेड 1 से 10 तक की पाठ्य पुस्तकों के लिए QR code वाली सामग्री है। जबकि अन्य के लिए एनआई के एसएचए पर विभिन्न ग्रेड की सामग्री है।

(5)इस ऐप को मोबाइल में डाउनलोड करके बच्चों को घर पर ही online पढ़ाई करवा सकते हैं।

(6)पढ़ाई की गुणवत्ता व शिक्षा की निरन्तरता सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा के लिए स्कूल शिक्षा के लिए E-learning प्लेटफॉर्म के रूप में यह ऐप एक बहुत बड़ी पहल है।

अर्चना वर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय भैना,
विकास खण्ड—गढ़मुक्तेश्वर,
जनपद—हापुड़।

इदम

मैं अनुपम सक्सेना आपको नए खेल से अवगत कराना चाहता हूँ। इस खेल को मैंने नाम दिया है इदम। यह बिल्कुल लूडो की तरह खेला जा सकता है। जिसमें एक साथ 6 या अधिक बच्चे खेल सकते हैं।

इसको अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग रंगों में बनाए जा सकता है और गोटियाँ भी इसी प्रकार से अलग–अलग रंगों की बनाई जा सकती हैं।

इस खेल में सर्वप्रथम हम अपनी दाईं ओर से खेल को प्रारम्भ करते हैं और जो ब्लैक स्पॉट है वहाँ पर अपनी बारी में पांसे से 1 या 6 आने पर गोटी को रखकर आगे बढ़ते हैं। इसी क्रम में नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे तीर की दिशा में चलते जाते हैं। जो रेडक्रॉस का निशान है वहाँ पर कोई भी गोटी पीटेगी नहीं और खिलाडी आगे बढ़ता जाएगा।

उदाहरण के लिए ऑरेंज वाला खिलाड़ी पांसे से 1 या 6 सबसे पहले लाकर अपनी गोटी को ब्लैक स्पॉट पर रखेगा और राइट साइड में आगे की ओर बढ़ेगा। इसी प्रकार से वह तीर की दिशा में आगे बढ़ता जाएगा और अन्त में अपनी बायीं ओर से ऑरेंज लाइन से होकर विजय करेगा।

यह बहुत ही सरल मनोरंजक और समय बिताने वाला खेल है जिसको सभी लोग अपने परिवार के साथ अपने मित्रों के साथ और हर जगह पर खेल सकते हैं। इसे बनाना भी सरल है और हर विद्यालय में प्रयोग किया जा सकता है।

इससे बच्चे जोड़ घटाना आसानी से सीख सकते हैं। बच्चों में खेल में रुचि बढ़ती है और बच्चों में शिक्षा और खेल दोनों के प्रति लगाव होता है। ये एक मनोरंजन खेल गतिविधि है। जिससे सामुदायिक और बौद्धिक विकास दोनों होता है।

आविष्कारकर्ता
अनुपम सक्सेना,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय मुरैठी,
विकास खण्ड–शमसाबाद,
जनपद–फर्रूखाबाद।

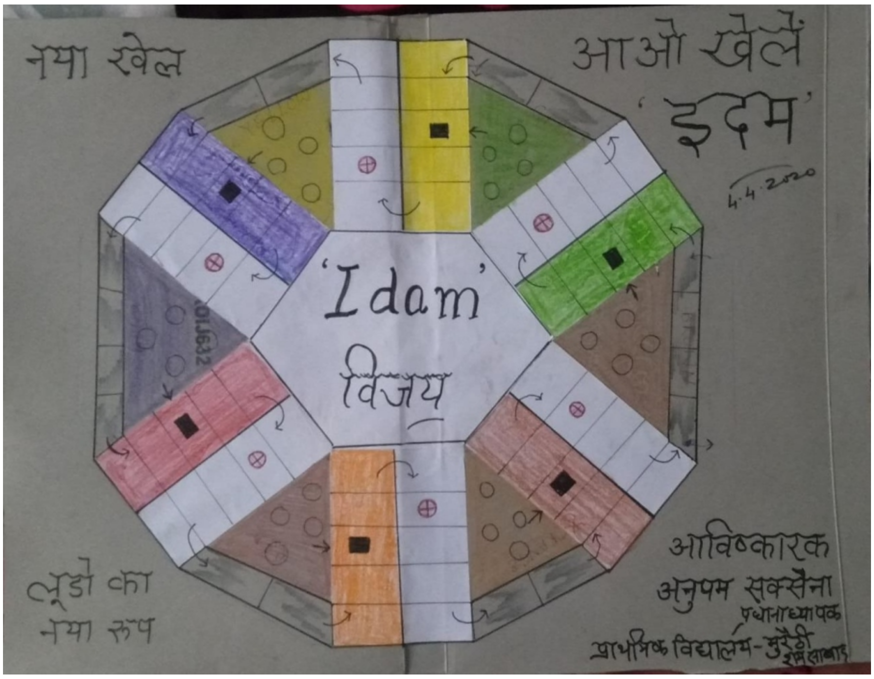

बुनियादी गणित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका

बुनियादी गणित वह गणित है जिससे बच्चा विद्यालय शिक्षा के शुरुआती वर्षों में परिचित होता है इस समय की समस्याओं का वर्णन प्रस्तुत लेख में रेखांकित करने के साथ–साथ उसका समाधान करने का प्रयास किया गया है। इसका उद्देश्य शिक्षकों द्वारा वर्तमान बुनियादी गणित को इतने सहज भाव से बालकों को हृदयांगम कराना है जिससे भविष्य का गणित उनके लिए सरल रोचक उपयोगी एवं व्यवहारिक बन जाए।

बुनियादी गणित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका ––

क्या है बुनियादी गणित?

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके बच्चों में निहित होता है बच्चा अपनी पार्श्विक वृत्तियों को लेकर जन्म लेता है। उसकी पार्श्विक वृत्तियों का शोधन एवं मार्ग आंतरिक करण शिक्षा द्वारा समाज करता रहता है जिससे बालक समाज का एक जिम्मेदार नागरिक बन सकें। शिक्षा मुख्यतः दो रूपों में बालकों तक पहुँचती है एक औपचारिक रूप में और दूसरे अनौपचारिक रूप में।

अनौपचारिक रूप में शिक्षा किसी भी व्यक्ति वस्तु अथवा परिस्थिति से कहीं से भी और कभी भी मिल सकती है। चूसने और रोने की मूल प्रवृत्तियों को लेकर जन्म लेने वाला बालक अपने घर, परिवार, मित्र, संबंधी, समाज एवं वातावरण में रहकर ही बोलना, खेलना, हँसना, अनुकरण करना तथा अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त करना सीख लेता है। बालक छोटे–बड़े, ऊपर–नीचे, दूर–पास, मोटे–पतले, लंबे–छोटे, कम–ज्यादा आदि की जानकारी इसी अनौपचारिक पृष्ठभूमि से प्राप्त कर लेता है जबकि औपचारिक शिक्षा देने के लिए अपरिष्कृत अनुभवों को परिमार्जित और परिष्कृत करने के लिए कुछ संस्थाओं की स्थापना की जाती है।

जैसे– स्कूल, पुस्तकालय, सिनेमा आदि। बालक जब विद्यालय में जाता है तो कोरी स्लेट नहीं होता है बल्कि बहुत सी संख्या पूर्ण अवधारणा को लेकर आता है। कक्षा में उसका परिचय अंकों, प्रतीकों एवं संक्रियाओं से होता है। इन्हीं अंकों, प्रतीकों और संक्रियाओं को उसकी संख्या पूर्ण अवधारणाओं के साथ संबंधित करना ही आधारभूत अथवा बुनियादी गणित है।

बुनियादी गणित शिक्षण में शिक्षक की भूमिका–

विद्यालयों में बच्चों का गणित से परिचय रोचक होना चाहिए। गणित की बुनियादी समझ इन बच्चों के लिए बहुत खुशियाँ ला सकती है। राष्ट्र के भविष्य को सँवारने में, छात्रों के अपेक्षित अधिगम परिणाम प्राप्त करने में आधारभूत गणित की समझ विकसित करना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। तकनीकी के निरंतर परिवर्तनशील युग में रखी रटी–रटाई प्रक्रिया को अपनाने से गणित एक अमूर्त विषय बन जाता है। अमूर्तता के इस साँचे में कुछ बच्चे तो समायोजित हैं किंतु बहुत अधिक बच्चे इस अमूर्त स्थिति को स्वीकार नहीं कर पाते हैं और सीखने के मुख्य उद्देश्य से वंचित हो जाते हैं।

आधारभूत गणित के परिप्रेक्ष्य में हमारा दृष्टिकोण होना चाहिए कि सभी विद्यार्थी गणित सीख सकते हैं तथा सभी विद्यार्थियों को गणित सीखने की जरूरत है। अतः गणित को रटने वाले, गणित से दूर भागने वाले तथा अमूर्तता के साँचे में समायोजित ना हो पाने वाले बालकों को भी गणित सीखने का उतना ही अधिकार है जितना कि किसी अन्य बच्चे को।

आधारभूत गणित में अमूर्त तथ्यों, प्रत्ययों, सिद्धांतों और संक्रियाओं को खेल, गतिविधियों, रोचक अनुभव, चित्रों, प्रयोगों के द्वारा प्रस्तुत किया जा सके तो अवश्य ही बालक में तर्क, चिंतन,

कल्पना, खोज, अनुमान, समस्या समाधान व निर्णय लेने के कौशलों का विकास हो सकेगा। उसका गणित को सीखना सरल, रुचिकर, स्वाभाविक, आनंददायक बन सकेगा।

शिक्षण के यांत्रिक रूप से सीखने की प्रक्रिया बच्चों से बच्चा होने के सुख को छीन लेती है तथा स्कूली शिक्षा को दिन प्रतिदिन के अनुभव से अलग कर देती है। बालक परिवर्तनशील समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में स्वयं को असहाय पाता है और बदलाव को शीघ्रता से अपना नहीं पाता। बालक राष्ट्र– समाज की विकास की दौड़ में पिछड़ता चला जाता है। यदि बालकों को बदलाव का वाहक और सृजक बनाना है तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उन्हें आधारभूत गणित से वंचित ना होने दें। बालक में अंकों, प्रतीकों, मापन व संक्रियात्मक अवधारणा विकसित होगी तो निश्चित ही भविष्य में गणित की एक समझ बन पाएगी।

विद्यालय में आने से पहले तक बालक संख्या पूर्ण अवधारणा को जानता है। सबसे पहले अध्यापक को छात्र के उसी स्तर को जानना चाहिए कि बालक जानता क्या है क्योंकि यह निश्चित नहीं है कि नव प्रवेशी अमुक बच्चा क्या जानता है और उसका स्तर क्या है। यही जानना शिक्षक का प्रथम कार्य है। चूँकि प्रत्येक छात्र स्वयं में एक अलग व्यक्तित्व है तो निश्चित ही सभी बच्चों का अपना अलग–अलग जानकारी–स्तर प्रारंभ में होगा। शिक्षक को एक निम्नतम् स्तर व निर्धारित कर लेना होगा, जिसे लगभग सभी बच्चे जानते हो। वही आधारशिला होगी जिस पर शिक्षा की इमारत खड़ी होगी। बालकों के सामान्य वार्तालाप, चर्चा, कहानी, खेल और गतिविधियों की सहायता से गहराई तक यह बुनियाद खोजी जा सकती है। शिक्षक सदैव से ही शिक्षा प्रक्रिया का मूल स्तंभ है।

आधारभूत गणित में शिक्षक की भूमिका निम्न दो रूपों में वर्णित हो सकती हैं–

- गणित की अमूर्त संक्रियाओं, प्रत्ययों, तथ्यों को चित्रों, प्रयोगों, अनुभवों, खेल और गतिविधियों द्वारा मूर्त रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- सभी विद्यार्थी गणित को सीख सकते हैं और सभी विद्यार्थी को गणित सीखने की आवश्यकता है।

देवांकुर,
एस०आर०जी०,एस०आर०पी०(गणित),सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय भटजन,
विकास क्षेत्र–भोजपुर,
जनपद–गाजियाबाद।

राष्ट्रीय स्तर पर कोरोनाकालीन प्रारंभिक पाठशाला शिक्षाः एक समग्र विश्लेषण
कोरोना का कमालः शिक्षा ने बदली अपनी चाल

श्री रमेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर, डीईई विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली
चरवाणीः +91 96438 98162, Email: ramesh.ncert@yahoo.co.in

इस दुनिया में एक ही तथ्य निश्चित है, वह है– परिवर्तन। कल तक जो मनुष्य इस अहंकार में जी रहा था कि वह अपने बौद्धिक कुशलता से किसी भी समस्या का चुटकी बजाते ही हल ढूँढ़ सकता है, उसे कोरोना की महामारी ने धूल फाँकने पर मजूबर कर दिया। समय बड़ा बलवान है। कब, कहाँ, कैसे और क्यों क्या कुछ हो जाए यह कोई नहीं बता सकता। इसलिए समय के साथ स्वयं को बदलना चाहिए। इस विपदा की घड़ी में सारा संसार जहाँ–तहाँ थम–सा गया है। इससे भारत भी अछूता नहीं है। इस स्थिति में रोटी, कपड़ा और मकान जो हमारी मूलभूत आवश्यकताएँ हैं उनकी आपूर्ति करना सरकार की पहली प्राथमिकता है। किंतु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के अनुसार प्रारंभिक शिक्षा 6–14 वर्षों यानी कक्षा एक से आठ तक के बच्चों का मूलभूत अधिकार है। इसे किसी भी स्थिति में नहीं रोकना चाहिए। यही कारण है कि एक ओर जहाँ केंद्र सरकार केंद्रीय स्कूलों में प्रारंभिक शिक्षा को सुनिश्चित करने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रही है वहीं दूसरी ओर राज्य सरकारें अपने–अपने ढंग से इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए कमर कस रही हैं।

कल तक जो यह माना जाता था कि औपचारिक शिक्षा मात्र निश्चित स्थानों, पाठ्यक्रमों, संसाधनों द्वारा संभव है, उसे कोरोना की संकट घड़ी ने गलत साबित किया है। बच्चों के शिक्षा रूपी मौलिक अधिकार को पूरा करने के लिए पाठशाला की धारणा बदलकर घर को शिक्षाभ्यास का केंद्र बना दिया गया। पाठ्यक्रम के भार को पूरी तरह से बगल में रखते हुए मात्र सीखने की संप्राप्तियों पर ध्यान केंद्रित करना, संसाधनों के नाम पर श्यामपट, चॉकपीस, पोंछक जैसी रूढ़ी संसाधन सामग्री के स्थान पर ई–सामग्री व ई–समूहों को स्थान देना आज की बदलती शिक्षा का परिचायक बन गया है। प्रशिक्षण के दौरान प्रायः हम जिन बातों को पढ़कर व्यवहार के धरातल पर आते–आते नगण्य कर देते थे आज वही फिर से सच साबित हो रहे हैं। बच्चे की पहली पाठशाला उसका घर है, पहली गुरु उसकी माँ है, तो देखिए वही अवधारणा कोरोना के चलते साकार हो रही है। सत्य तो यही है कि गुरु बच्चे और ज्ञान के बीच पहले भी सेतु था, आज भी सेतु है और कल भी सेतु ही रहेगा। वह अपने फेसिलिटेटर रूप से कभी बाहर आ ही नहीं सकता।

कोरोना के चलते शिक्षा ने अपना मंच बदला है। पहले जहाँ वह श्यामपट, कॉपी–पुस्तकों तक सीमित थी आज वह मोबाइल, टैब, लैपटाप, कंप्यूटर के जरिए जहाँ–तहाँ पहुँच गयी है। यही कारण है कि देश की अब तक की जितनी भी शिक्षा नीतियाँ हैं, वे तकनीकी व सांकेतिक रूप से शिक्षा को सुदृढ़ बनाने पर जोर देती रहीं। आज उनके सुझाव कसौटी की माँग पर खरे उतर रहे हैं। कुछ शब्द जो कोरोना से पूर्व हमारे लिए मायने नहीं रखते थे आज वही सर्वस्व बन चुके हैं। जूम, माइक्रोसॉफ्ट, गूगल आदि के ऑनलाइन प्लेटफार्म सीखने का वर्चुअल केंद्र बनकर उभरे हैं। निश्चित तौर पर निकट भविष्य में इन्हीं का वर्चस्व रहेगा। चलिए अब हम वर्तमान में देश के विभिन्न प्रांतों में प्रारंभिक शिक्षा के लिए उठाए गए कदमों की समीक्षा करते हैं–

उत्तर भारत

उत्तर भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, चंडीगढ़, राजस्थान,

हरियाणा, उत्तराखंड, दिल्ली आदि सभी प्रांतों में ई–पाठशाला, दीक्षा एप्प, और स्वयं से पठन पाठन की सामग्री, स्कूल के व्हाट्सएप समूह से बच्चों / अभिभावक को जोड़कर पढ़ाया जा रहा है। अलग–अलग विषय के लिए पाठ को समझाने के लिए वॉइस मैसेज का भी प्रयोग किया जा रहा है। बच्चों द्वारा नोट बुक में कार्य करने के बाद फोटो संबंधित व्हाट्सएप ग्रुप में डाले जा रहे हैं और अध्यापक उसकी जाँच कर रहे हैं। त्रुटियाँ सुधार कर पुनः फोटो को अपडेट कर रहे हैं। साथ ही ध्यानाकर्षण, आधारशिला और शिक्षण संग्रह पर अध्यापकों के लिए क्विज का आयोजन किया जा रहा है। इससे अध्यापक अपडेट रहते हैं। दीक्षा एप्प पर टीचर ट्रेनिंग चल रही है। साथ में मिशन प्रेरणा व मिशन कायाकल्प के कार्यक्रम भी संचालित हैं, जिसके लिए जनपद स्तर /ब्लॉक स्तर पर पर अलग –अलग कई व्हाट्सएप समूह बनाए गए हैं। हर व्हाट्सएप समूह अलग–अलग उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बनाया गया है। विशेष बात यह है कि उत्तर प्रदेश में व्हाट्सएप्प ग्रुपों की सहायता से छात्रों व अध्यापकों को जोड़ने का जो प्रयास किया जा रहा है, वह काफी रंग ला रहा है। जबकि झारखंड में दूरदर्शन की सहायता से शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जा रहा है। इससे इंटरनेट की बचत व वैकल्पिक उपाय ढूँढ़े जा रहे हैं। पंजाब में गूगल ड्राइव के लिंकों की सहायता से शिक्षार्थियों को सीधे–सीधे लाभ पहुँचाया जा रहा है। राजस्थान में शिक्षावाणी नाम से नवीन प्रयास किए जा रहे हैं। दिल्ली तथा उत्तराखंड में वीडियो पाठ, जूम कक्षाएँ, उत्तर सहित वर्कशीट्स, क्रियाकलाप, श्रव्य सामग्री, कठपुतलियों द्वारा खेल–खेल में शिक्षा, बच्चों के साझा अनुभवों के माध्यम से ई–शिक्षण दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति कर रहा है।

दक्षिण भारत

दक्षिण भारत जहाँ शिक्षा का प्रतिशत भारत में सबसे अधिक है, वहाँ के केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पांडिचेरी, अंडमान व निकोबार आदि सभी प्रांतों में विशेष शैक्षिक वेबसाइटों से जोड़कर बच्चों तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। वर्कशीट्स, रिविजन शीट्स, ऑडियो–वीडियो पठन सामग्री के अतिरिक्त यूट्यूब पर विशेष कक्षाओं का प्रसारण किया जा रहा है। इससे बच्चे अपनी सुविधानुसार पाठ देख व सुन सकते हैं। चूँकि दक्षिण में शैक्षिक जागरूकता अधिक है, इसलिए यहाँ पर परिणाम त्वरित गति में निकलकर आ रहे हैं। आंध्र प्रदेश में जहाँ अम्मा ओडि, तेलंगाना में बंगारु बडुलु, कर्नाटक में नम्मा बड़ी शीर्षकीय शैक्षिक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं वहीं केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी व अंडमान में दूरदर्शन, क्यूआर कोड युक्त ई–पुस्तकों, दीक्षा एप्प तथा प्रांत विशेष के एप्पों द्वारा बच्चों को सरल व सुगम ढंग से शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

पूर्वी भारत

पूर्वी भारत के पश्चिम बंगाल, ओडिशा, त्रिपुरा, असोम, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, सिक्किम आदि सभी प्रांतों में विशेष शैक्षिक पहल से जोड़कर बच्चों तक शिक्षा पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। दूरदर्शन, यूट्यूब आदि पर कक्षावार आडियो–वीडियो सामग्री, खेल, पहेलियों आदि की सहायता से शिक्षण किया जा रहा है। इन राज्यों में अन्य राज्यों की भाँति नवोन्मेषणात्मक शैक्षिक कार्यक्रमों के न केवल प्रति दिलचस्पी दिखायी है बल्कि उसे अमलीजामा भी पहनाया है। त्रिपुरा जैसे राज्यों में नोतुन दिशा नामक कार्यक्रम से बच्चों की शिक्षा के प्रति जो गंभीरता दर्शाने का प्रयास किया गया है वह वाकई प्रशंसनीय है।

पश्चिमी भारत

पश्चिमी भारत के महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, दियु दामन आदि सभी प्रांतों में दूरदर्शन, यूट्यूब आदि पर कक्षावार आडियो–वीडियो सामग्री, खेल, पहेलियों आदि की सहायता से शिक्षण किया जा रहा

है। इन राज्यों में ऑनलाइन अभ्यास व उपक्रम की व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रांत विशेष द्वारा विकसित एप्प के माध्यम से ई–शिक्षा तक पहुँचाने का प्रबंध किया गया है। इनके अतिरिक्त कक्षावार, विषयवार, पाठवार शैक्षिक लिंकों की सहायता से अपनी सुविधानुसार अधिगम करने के प्रबंध किए गए हैं। आमची बियाणे बैंक, आजच्या पुस्तकाचे नावः शूर मित्र, पोस्टर कलरमध्ये वस्तुचित्रातील बकेट रंगवणे, ऋतू कसे निर्माण होतात?, घन ठोकळ्यांची मांडणी आदि शीर्षकीय पाठों से प्रतिदिन अभ्यास कार्य तैयार किए जा रहे हैं। इनके अतिरिक्त बच्चों को सुनाने के लिये 'एक पाऊल वाचन समृद्धीकडे' अंतर्गत प्रतिदिन एक कहाणी भेजी जाती है। इसके लिये व्हाटसएप, यूट्यूबचैंनल व फेसबुक का उपयोग करते हैं। विशेष बात यह है कि जिन अभिभावकों के पास एंड्रायड मोबाईल फोन नहीं है उनके लिये कैवल्य फाउंडेशन के टोल फ्री नंबर 1800–572–8585 पर सुबह नौ से शाम पाँच बजे तक बिना किसी शुल्क के कहानी सुन सकते हैं।

मध्य भारत

मध्य भारत के मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों में जूम एप्प के माध्यम से प्रतिदिन तीन घंटों की कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन व आकाशवाणी का विशेष रूप से उपयोग किया जा रहा है। कोरोना के इस विपदाकाल में दूरदर्शन व आकाशवाणी रामबाण साबित हो रहे हैं। वीडियो पाठ, जूम कक्षाएँ, उत्तर सहित वर्कशीट्स, क्रियाकलाप, श्रव्य सामग्री की सहायता से प्रारंभिक शिक्षा पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार ने बंद के दौरान स्कूली बच्चों को घर पर ही रहकर पढ़ने के लिए पढ़ई तुंहर दुआर पोर्टल का शुभारंभ किया है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि भारत भर में सभी राज्य ई–शिक्षा के माध्यम से बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के प्रति अत्यंत गंभीर हैं। वे अपनी हरसंभव कोशिशों से बच्चों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ले जाने का भगीरथ प्रयास कर रहे हैं। दूरदर्शन, आकाशवाणी, सोशल मीडिया प्लेटफार्म, जूम, माइक्रोसाफ्ट, गूगल वीडियो एप्स हों या फिर अन्य सामग्री की सहायता से बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने की पहल प्रशंसनीय है। हाँ यह अलग बात है कि इन सब प्रयासों के बावजूद भारत में इंटरनेट की स्पीड एक बड़ी समस्या है। ब्रॉडबैंड स्पीड विश्लेषण करने वाली कंपनी ऊकला की एक रिपोर्ट के मुताबिक, सितंबर 2019 में भारत मोबाइल इंटरनेट स्पीड के मामले में 128वें स्थान पर रहा। भारत में डाउनलोड स्पीड 11.18 एमबीपीएस और अपलोड स्पीड 4.38 एमबीपीएस रही। ऐसे में वीडियो क्लासेज लेते समय इंटरनेट स्पीड का कम ज्यादा होना समस्या पैदा करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट स्पीड की हालत और बुरी है, बिजली चले जाने पर इंटरनेट या तो बंद हो जाता है या फिर 2जी की स्पीड पर कुछ देख सुन नहीं सकते। इसके अलावा देश के बहुतायत विद्यार्थियों के पास ऑनलाइन पढ़ने और पढ़ाने के संसाधन ही उपलब्ध नहीं है। ऐसी स्थितियों में कैसे ऑनलाइन शिक्षा दी या ली जा सकती है।

इनके अतिरिक्त तकनीकी साक्षरता में हम काफी पिछड़े हैं। अगर तकनीकी शिक्षा से जुड़े अध्यापकों और विद्यार्थियों को छोड़ दें तो बाकी लगभग सभी विषयों से जुड़े शिक्षकों और शिक्षार्थिंयों को तकनीकी समस्या का सामना करना पड़ता है। प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर यह समस्या बहुत बड़ी समस्या है। आजकल छोटे–छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक को टेबलेट, लेपटॉप, डेस्कटॉप और स्मार्ट फोन के सहारे पढ़ाया जा रहा है। ऐसे में अगर तकनीकी समझ किसी भी स्तर पर हावी होता है तो सीखने की क्षमता पर बड़ा प्रभाव डालता है। सरकार शिक्षकों की तकनीकी समझ बढ़ाने के लिए लगी तो रहती है लेकिन जमीनी स्तर में अगर स्थितियों को देखें तो मामला उल्टा ही नजर आता है। अधिक ऑनलाइन शिक्षा का शारीरिक और मानसिक रूप से भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

अतः किसी भी प्रयास का सीमा के भीतर रहकर, बोधगम्यता के स्तर पर जाकर प्रयास किया जाए तो वह लाभकारी सिद्ध होगा। अतः वर्तमान किए जा रहे प्रयासों में से उसके नफा–नुकलानों पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो निश्चित तौर पर प्रारंभिक शिक्षा स्तर पर किए जा रहे प्रयास निकट भविष्य में उज्ज्वलमय परिणाम लाएँगे।

संदर्भः

1. राज्यों की प्रारंभिक शिक्षा संबंधी किए जा रहे प्रयासों की रपटें
2. राज्यों में कार्य करने वाले अध्यापकों व छात्रों के लिखित अनुभव
3. दूरदर्शन, आकाशवाणी द्वारा चलाए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रमों की सूची

डॉ0 रमेश कुमार
टाईप – 4, क्वार्टर 14,
एनसीईआरटी कैंपस,
एनसीईआरटी, नई दिल्ली
पिन कोड – 110016

अनमोल बाल रत्न

नाम कु0 बबली
विद्यालय : रा0प्रा0वि0 सारेग्वाड़
ब्लॉक : गैरसैंण । जिला : चमोली
उत्तराखंड

उपलब्धियां :- विद्यालयी क्रीड़ा प्रतियोगिता में खो-खो में राज्य स्तर पर दो वर्षों से लगातार प्रतिभाग। सत्र 2019-20 में राज्य स्तर पर खो-खो में रजत पदक प्राप्त किया। नृत्य कला में निपुण।गायन में निपुण।

रा0 प्रा0 वि0 सारेग्वाड़ गैरसैंण चमोली उत्तराखंड

अनमोल बाल रत्न

नाम रोशन सिंह
विद्यालय : रा0प्रा0वि0 सारेग्वाड़
ब्लॉक : गैरसैंण । जिला : चमोली
उत्तराखंड

उपलब्धियां :- विद्यालयी क्रीड़ा प्रतियोगिता में खो-खो में राज्य स्तर पर प्रतिभाग। सत्र 2019-20 में राज्य स्तर पर खो-खो में कांस्य पदक हासिल किया।

रा0 प्रा0 वि0 सारेग्वाड़ गैरसैंण चमोली उत्तराखंड

अनमोल बाल रत्न

नाम ललित मोहन
विद्यालय : रा0प्रा0वि0 सारेग्वाड़
ब्लॉक : गैरसैंण । जिला : चमोली
उत्तराखंड

उपलब्धियां :- विद्यालयी क्रीड़ा प्रतियोगिता में खो-खो में राज्य स्तर पर तीन वर्षों से लगातार प्रतिभाग। सत्र 2019-20 में राज्य स्तर पर खो-खो में कांस्य पदक हासिल किया।

रा0 प्रा0 वि0 सारेग्वाड़ गैरसैंण चमोली उत्तराखंड

अनमोल बाल रत्न

नाम कु0 हिमानी
विद्यालय : रा0प्रा0वि0 सारेग्वाड़
ब्लॉक : गैरसैंण । जिला : चमोली
उत्तराखंड

उपलब्धियां :- विद्यालयी क्रीड़ा प्रतियोगिता में खो-खो में राज्य स्तर पर तीन वर्षों से लगातार प्रतिभाग। सत्र 2019-20 में राज्य स्तर पर खो-खो में रजत पदक प्राप्त किया। नृत्य कला में निपुण।

रा0 प्रा0 वि0 सारेग्वाड़ गैरसैंण चमोली उत्तराखंड

छात्र का नाम – निशांत s/o श्यामबहादुर
कक्षा – 8वीं
विद्यालय का नाम – पूर्व माध्यमिक विद्यालय भन्नौर बरसठी जौनपुर
उपलब्धि – (1) जिला स्तरीय राष्ट्रीय अविष्कार प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान। पुरुस्कार रु0 2000 और प्रमाणपत्र
(2) जिला स्तरीय दक्षता परीक्षा में द्वितीय स्थान। पुरुस्कार रु0 5000, साइकिल और प्रमाणपत्र
(3) राष्ट्रीय स्तर पर नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में कक्षा 9वीं के लिए चयन।

बाल काव्यांजलि की पहली कविता

मिशन हलचल

लक्ष्य शिक्षा के साथ श्वांसों की व्यवस्था

पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ, जीवन बचाओ अभियान– 5 जून 2020

आज बढ़ते पर्यावरण संकट से जूझ रही दुनिया को बचाने के लिए नई पीढ़ी को आगे आने और पर्यावरण संरक्षण की जिम्मेदारी उठाने की आवश्यकता है क्योंकि यदि हम सभी आज सचेत नहीं हुए तो आने वाले भविष्य में हमारी श्वांसों पर ही संकट आ सकता है, जिससे आने वाली पीढ़ियों के जीवन के अस्तित्व पर भी खतरा आ सकता है।

इसी को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार और राज्य सरकार ने पर्यावरण की रक्षा और भारत को हरा– भरा बनाने के लिए वृक्षारोपण के बेहतर प्रयास शुरू किए हैं। लेकिन हर वर्ष लगने वाले करोड़ों पौधों में केवल 5 –7 प्रतिशत ही जिंदा रह पाते हैं। इसका प्रमुख कारण है कि प्रकृति संरक्षण में आम जनसमुदाय की सहभागिता और जागरूकता की कमी और जब तक इस अभियान में आम जनसमुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित नहीं होगी, तब तक यह कार्यक्रम अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर सकेगा।

हमारा मानना है शिक्षक केवल बच्चों को मात्र शिक्षण कार्य करने वाला सेवक नहीं है बल्कि शिक्षक सामाजिक सभ्यता के परिवर्तन का सम्पादक भी है। इतिहास गवाह है कि आज तक कोई भी अभियान, बिना शिक्षकों की सक्रिय सहभागिता के जन–आन्दोलन का रूप प्राप्त नहीं कर सका है।

इसलिए मिशन शिक्षण संवाद अपने सहयोगी टीचर्स क्लब के साथ मिलकर सोशल मीडिया पर जुड़े विभिन्न राज्यों के 50 हजार से ज्यादा शिक्षकों और जनपदों के सक्रिय सहयोग से रेड टेप मूवमेंट को शामिल करते हुए इस अभियान को जनसमुदाय से जोड़ने और आम नागरिक को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस पर पर्यावरण रक्षा के लिए सहभागिता एवं जागरूकता अभियान चला रहा है।

कार्यक्रम के अंतर्गत लॉकडाउन के कारण विगत वर्ष की तरह विद्यालयों में तो कुछ संभव नहीं था। अतः शिक्षकों व बच्चों ने घर में बड़े ही उत्साह के साथ 5 जून पर्यावरण दिवस को वृक्षारोपण/लगे वृक्षों पर रक्षा सूत्र (रेड टेप) बांधने, गमलों की निराई, गुड़ाई का कार्यक्रम किया।

इस कार्यक्रम में पूरे प्रदेश से लगभग 5000 बच्चों/शिक्षकों व अभिभावकों ने प्रतिभाग किया।

मिशन शिक्षण संवाद परिवार सभी शिक्षक साथियों के सहयोग से पेड़ों को बचाने को इण्टरनेशनल रेड टेप संस्था से मिलकर पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से यह कार्यक्रम करता है।

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ
लगे हुए है तो उन्हें बचाएँ।
धरती पर हरियाली लाएँ
हर घर आँगन को महकाएँ।।

टीम मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः– मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने–सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर–9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/118010865464649/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6– व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7– ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8– वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात